RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

महाशिवरात्रि

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-11, अंक-03, हिन्दी (मासिक), मार्च 2024, पृष्ठ 16, मूल्य: 12:50 रु.

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने जीवन के 100वें बसंत में किया प्रवेश

नारी शक्ति के सबसे बड़े संगठन ब्रह्माकुमारीज़ की मुखिया राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी स्थापना से लेकर आज वटवृक्ष बनने की रहीं हैं साक्षी

ब्रह्माकुमारी परिवार की अनमोल रतन परमात्मा की मोहिनी

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। 25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद के एक साधारण परिवार में दैवी स्वरूपा बेटी ने जन्म लिया। माता-पिता ने नाम रखा लक्ष्मी। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बेटी अध्यात्म और नारी शक्ति का जगमग सितारा बनकर सारे जग को रोशन करेगी। बचपन से अध्यात्म के प्रति लगन और परमात्मा को पाने की चाह ने मात्र 12 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी ने विश्व शांति और नारी सशक्तिकरण की मुहिम में खुद को झोंक दिया। जीवन के 100वें बसंत में प्रवेश करने के बाद भी आज भी उतने ही उमंग और उत्साह से परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने में वह समर्पित हैं। हम बात कर रहे हैं ब्रह्माकुमारी संगठन की मुखिया, 50 हजार ब्रह्माकुमारियों की नायिका और लाखों लोगों की प्रेरणास्रोत राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की। दादी वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज की स्थापना से लेकर आज तक 87 वर्ष की यात्रा की साक्षी रही हैं। संगठन को यहां तक पहुंचाने में जीवन त्याग, तपस्या, सेवा और साधना में समर्पित कर दिया। पिछले 40 से अधिक वर्ष से आप संगठन के ही युवा प्रभाग की अध्यक्षा की भी जिम्मेदारी संभाल रही हैं। आपके नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा पदयात्रा, साइकिल यात्रा और अन्य अभियान चलाए गए। जीवन के इस पड़ाव पर भी आप पूरे उमंग-उत्साह के साथ सेवा में जुटी हैं। राजयोग ध्यान से आज भी दिनचर्या की शुरुआत होती है। **दादीजी के तपस्वी जीवन पर प्रस्तुत है एक रिपोर्ट...**

> 100वें वर्ष में प्रवेश कर चुकीं दादी की आज भी राजयोग ध्यान से शुरू होती है दिनचर्या

बचपन से ही थे भक्तिभाव के संस्कार

दादी रतनमोहिनी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार रहे हैं। छोटी सी उम्र होने के बाद भी आप अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने के स्थान पर ईश्वर की आराधना में अपना ज्यादा वक्त गुजारती थीं। स्वभाव धीर-गंभीर था। पढ़ाई में भी होशियार होने के साथ प्रतिभा संपन्न रहीं हैं।

ब्रह्मा बाबा के साथ 32 साल का लंबा सफर तय किया

दादीजी ने वर्ष 1937 से लेकर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने (वर्ष 1969) तक साए की तरह साथ रहीं। इन 32 साल में आप बाबा के हर पल साथ रहीं। बाबा का कहना और दादी का करना यह विशेषता शुरु से ही थी। बाबा जो शिक्षाएं भाई-बहनों को देते तो दादी अक्षरश: उन्हें अपने जीवन में शिरोधार्य करतीं। यही कारण है कि सैकड़ों भाई-बहन होने के बाद भी आप विशेष स्नेही और भरोसेमंद रहीं। बाबा ने जिस आस से आप को जिम्मेदारी सौंपी आपने उससे कई गुना बेहतर करके साबित कर दिखाया।

फैक्ट फाइल

- **25 मार्च 1925** को सिंध हैदराबाद में जन्म
- **12 वर्ष** की आयु में 1937 में ब्रह्मा बाबा से मिलीं
- **50 हजार ब्रह्माकुमारी** पाठशाला संचालित
- **50 हजार** ब्रह्माकुमारी बहनों की हैं नायिका
- **5500** सेवाकेंद्र दादी के मार्गदर्शन में संचालित
- **1956** से 1969 तक मुंबई में दीं सेवाएं
- **1954** जापान में विश्व शांति सम्मेलन में किया संस्थान का प्रतिनिधित्व

सुबह 3.30 बजे से दिनचर्या शुरू

99 वर्ष की आयु में आज भी दादी की दिनचर्या अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से शुरु हो जाती है। सबसे पहले वह परमपिता शिव परमात्मा का ध्यान करती हैं। राजयोग मेडिटेशन आज भी उनकी दिनचर्या में शामिल है। हमेशा परमात्मा के ध्यान में अंतर्ध्यान रहती हैं। योग-तपस्या से खुद को इतना मजबूत बना लिया है कि अब भौतिक जगत से सदा उपराम और परमात्मा के ध्यान में मग्न रहती हैं।

संस्थान में आने वाली बहनों की ट्रेनिंग और नियुक्ति की कमान दादी के हाथ में...

वर्ष 1996 में ब्रह्माकुमारीज़ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तय हुआ कि अब विधिवत बेटियों को ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए एक ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने आपको ट्रेनिंग प्रोग्राम की हैड नियुक्त किया। तब से लेकर आज तक आपके ही मार्गदर्शन में बेटियां ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग लेकर अपना जीवन समाजसेवा और विश्व कल्याण के कार्य में समर्पित करती हैं। बहनों की नियुक्ति का कार्य भी शुरु से लेकर दादीजी के हाथों में रहा है। संस्थान में विधिवत ट्रेनिंग लेने के बाद उन्हें आईकार्ड जारी करने का कार्य आपके ही जिम्मे रहा है। दादी के नेतृत्व में अब तक 5500 सेवाकेंद्रों की 50 हजार से अधिक बहनों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

चार दिनी शताब्दी महोत्सव मार्च में

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के शतायु होने पर मुख्यालय शांतिवन में चार दिवसीय 22 से 25 मार्च 2024 तक शताब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इसमें देशभर से जानीं-मानीं हस्तियां, संत- विद्वान भाग लेंगे। समारोह में दादी का सम्मान किया जाएगा। इसमें विशेष रुप से वरिष्ठ ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भाग लेंगे। वीडियो प्रजेंटेशन के माध्यम से दादी के जीवन की उपलब्धियों को दिखाया जाएगा।

दो लाख बालब्रह्मचारी युवाओं की रूहानी फौज की कमांडर हैं... दादी रतनमोहिनी

- 40 साल से युवा प्रभाग की संभाल रहीं हैं कमान
- दादी के नेतृत्व में युवा प्रभाग ने रचे कई कीर्तिमान
- गुलबर्गा विश्वविद्यालय ने दादी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा

शिव आमंत्रण, आबू रोड

जीवन के 100वें बसंत में प्रवेश कर रहीं ब्रह्माकुमारीज संगठन की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने अपना जीवन खासकर युवाओं के सशक्तिकरण और नवनिर्माण में लगा दिया। दादीजी के कुशल नेतृत्व, अथक मेहनत, त्याग-तपस्या और सेवा साधना का परिणाम है कि आज ब्रह्माकुमारीज में दो लाख से अधिक बालब्रह्मचारी, निर्व्यसनी युवाओं की रुहानी फौज तैयार हो गई है। ये युवा भाई-बहनें कदम से कदम मिलाकर विश्व शांति, विश्व एकता और विश्व बंधुत्व के भाव के साथ दिन-रात ईश्वरीय सेवा में समर्पित हैं। संयमित जीवन और योग साधना इनके जीवन का लक्ष्य है।

2006 में विश्व की सबसे लंबी पदयात्रा निकाली

युवा प्रभाग द्वारा दादीजी के नेतृत्व में 2006 में निकाली गई स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा ने ब्रह्माकुमारीज के इतिहास में एक नया अध्याय लिख दिया। 20 अगस्त 2006 को मुंबई से यात्रा का शुभारंभ किया गया और 29 अगस्त 2006 का तीनसुकिया असम में समापन किया गया। स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा द्वारा पूरे देश में 30 हजार किमी का सफर तय किया गया। इसमें पांच लाख ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया। सवा करोड़ लोगों को शांति, प्रेम, एकता, सौहार्द, विश्व बंधुत्व, अध्यात्म, व्यसनमुक्ति और राजयोग ध्यान का संदेश दिया गया।

सर्दी, गर्मी और भीषण बारिश भी नहीं रोक पाई यात्रियों की राह

सर्दी, गर्मी, बारिश के बीच ब्रह्माकुमारीज से जुड़े निर्व्यसनी, बालब्रह्मचारी युवा भाई-बहनों स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा में शांति और स्वर्णिम भारत का संदेश लेकर निकले। देश के अलग-अलग हिस्सों से एकसाथ सैकड़ों यात्राएं निकालीं गईं। रास्तेभर में आने वाले स्कूलों-कॉलेजों, गांवों में कार्यक्रम, रैली, प्रदर्शनी के माध्यम से युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए जागरूक करने का संदेश दिया गया। यात्रा का परिणाम है कि हजारों युवाओं ने नशा छोड़ आध्यात्मिक जीवनशैली को अपनाने का दृढ़ संकल्प किया।

देश में बनाए कई रिकार्ड

1985 में भारत एकता युवा पदयात्रा निकाली गई। इससे 12550 किमी की दूरी तय की गई। यात्रा का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया था। कन्याकुमारी से दिल्ली (3300 किमी) की सबसे लंबी यात्रा रही।

एक साथ 67 रैली निकालीं, 1903 गांव में पहुंचीं

दादीजी के नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा वर्ष 1989 में 778 तपस्वी कुमार-कुमारियों के दल ने एकसाथ पूरे भारत से 67 वाहन रैली निकालीं। इनके माध्यम से 1903 गांवों में लोगों को नशामुक्ति, व्यसन-बुराई छोड़ने और जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाने, राजयोग मेडिटेशन सीखने और आनंदमय जीवन जीने की कला का संदेश दिया गया। इसके माध्यम से 136734 लोगों से नशीली दवाओं के दुरुपयोग, अंध विश्वास, इंद्रियों की गुलामी को खत्म करने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरवाए गए।

1985 में दादीजी ने की 13 पैदल यात्राएं...

दादी के निर्देशन में करीब 70 हजार किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्राएं निकाली जा चुकी हैं। वर्ष 2006 में निकाली गई युवा पदयात्रा ने लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में जहां नाम दर्ज कराया, वहीं सभी यात्रियों ने 30 हजार किमी की पैदल यात्रा तय की। दादी ने 13 मेगा पैदल यात्राएं की हैं। अगस्त 1989 में देश के 67 स्थानों पर एकसाथ अखिल भारतीय नैतिक जागृति अभियान चलाया चलाया गया। अभियान में सैकड़ों स्कूल-कॉलेजों, युवा क्लब और सामाजिक सेवा संस्थानों में प्रदर्शनियां, व्याख्यान, सेमिनार और रचनात्मक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनमें कई राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया।

एम्पावर यूथ प्रोग्राम: सात राज्यों में चलाया अभियान

यह परियोजना वर्ष 2007-08 में देश के 7 राज्यों में कॉलेज विद्यार्थियों, नौकरीपेशा और बेरोजगार 16 से 35 वर्ष के युवाओं के लिए शुरु की गई। इसका उद्देश्य युवाओं को उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक और आध्यात्मिक जीवन को सशक्त बनाकर उनमें मूल्यों के विकास के लिए मोटिवेट करना था। ताकि वह जीवन में आने वाली परिस्थितियों का साहस, दृढ़ संकल्प के साथ सामना कर करें। इसमें युवाओं से भगवान के नाम पत्र लिखवाए गए। इसमें देशभर से लाखों युवाओं ने पत्र लिखे। वर्ष 1993 में सद्भाव के लिए युवा साइकिल रैली थीम के तहत 25-30 राजयोगी भाई-बहनों के ग्रुप में युवा साइकिल रैली पूरे देश में निकाली गई। इन रैलियों के माध्यम से भारत के विभिन्न राज्यों के 3009 गांव और शहरों को कवर किया गया। इनसे 966508 लोगों को संदेश दिया गया।

दादीजी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा

20 फरवरी 2014 को गुलबर्गा विश्वविद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में कुलपति प्रोफेसर ईटी पुट्टैया और रजिस्ट्रार प्रोफेसर चंद्रकांत यतनूर द्वारा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से नवाजा गया। उन्हें यह उपाधि विशेष रुप से युवाओं और महिलाओं के आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक सशक्तिकरण में उनके योगदान के लिए प्रदान की गई। इसके अलावा देश-विदेश में कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से समय प्रति समय दादी को सम्मानित किया गया है।

दादीजी की सेवा का सफर-

- **1954** में जापान में आयोजित विश्व शांति सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया। एक वर्ष तक एशिया के देशों में सेवाएं दीं।
- **1956 से 1969** तक मुंबई में ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। आध्यात्मिक सेवा के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की। देशभर में कई सेमिनार और सम्मेलन आयोजित किए।
- **1972 से 1974** तक यूनाइटेड किंगडम में सेवाकेंद्रों की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई।
- **1993** मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की और व्याख्यान दिए।
- **1994** कैरेबियन, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा में भारतीय संस्कृति का संदेश दिया।
- **1995** में देशभर में युवा विकास अभियान चलाया गया। इसमें माध्यम से युवाओं को अध्यात्म और राजयोग का संदेश दिया गया।
- **2001** में ब्राजील, अटलांटा (यूएसए), यूके में नेशनल एडवांस मेडिटेशन रिट्रीट की यात्रा की और संचालन किया।
- **2003** में मास्को और सेंट पीटर्सबर्ग, रुस में नेशनल एडवांस मेडिटेशन रिट्रीट की यात्रा की और आयोजन किया।
- **2005** में डब्ल्यूपीसी 1954 के स्वर्ण जयंती वर्ष की स्मृति में दादी ने जापान (फिलीपींस और हांगकांग) का दौरा किया।

रेडियो मधुबन... हिंसा को नो अभियान

हिंसा को नो अभियान से जुड़ीं चार गांव की महिलाएं अपने अधिकारों को लेकर हो रहीं जागरूक

घूंघट से बाहर निकल आवाज मुखर कर रहीं महिलाएं

आबू रोड के गांधीनगर क्षेत्र, लूनियापुरा, मोरथला और उमरनी गांव में महिलाओं के बनाए गए ग्रुप

आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सामुदायिक रेडियो स्टेशन मधुबन रेडियो (107.8 एफएम) द्वारा चलाए जा रहे हिंसा को नो अभियान के सकारात्मक परिणाम आने लगे हैं। रेडियो मधुबन टीम की तीन साल की अथक मेहनत का परिणाम है कि अब महिलाएं घूंघट से बाहर निकल अपने अधिकारों के प्रति जहां सजग और जागरूक हो रही हैं, वहीं अपनी बात मुखरता से रखने लगी हैं। जो महिलाएं पहले बात करने में झिझक महसूस करती थीं आज वह मंच से पूरी निडरता और साहस के साथ मन की बात कह पाती हैं। उनमें जहां आत्म विश्वास जागा है, वहीं रचनात्मक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ी है। इससे वह बच्चों की पढ़ाई को लेकर भी सजग हुई हैं। घरेलू हिंसा का भी पूरी निडरता से विरोध करने लगी हैं। साफ-सफाई की भावना का विकास हुआ है। हिंसा को नो अभियान को लेकर एक रिपोर्ट...

प्रत्येक गांव में 25 महिलाओं का एक ग्रुप बनाया

हिंसा को नो अभियान के तहत आबू रोड के गांधीनगर क्षेत्र, लूनियापुरा, मोरथला और उमरनी गांव को लिया गया है। चूंकि यह क्षेत्र अति पिछड़ा और आर्थिक रूप से कमजोर और अशिक्षित वर्ग होने के कारण महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता की कमी थी। अभियान के तहत प्रत्येक गांव में 25 महिलाओं का एक ग्रुप बनाया गया है। ग्रुप की सप्ताह में एक बार बैठक आयोजित की जाती है। इसमें विशेष रूप से रेडियो मधुबन की टीम के आरजे और काउंसलर अलग-अलग मुद्दों, टॉपिक पर वर्कशॉप लेकर उन्हें महिला अधिकारों को लेकर शिक्षित करती हैं। इसमें महिलाएं बड़े ही उमंग-उत्साह के साथ भाग ले रही हैं।

अंधविश्वास और रुढ़िवादिता पर करते हैं विशेष फोकस

अभियान में मुख्य रूप से अंधविश्वास और रुढ़िवादिता पर फोकस किया गया है। अति पिछड़ा क्षेत्र होने से यहां की जीवनशैली में रुढ़िवादिता का व्यापक असर दिखता है। अभियान के दौरान तीन साल से लगातार जारी वर्कशॉप और काउंसलिंग का परिणाम है कि अब महिलाएं जागरूक होने लगी हैं। उनमें समाज में आत्म सम्मान के साथ जीने की भावना पैदा हुई है। साथ ही घर में हो रही हिंसा का अब मुखरता से विरोध भी करने लगी हैं। उनमें हीनभावना कम हुई है और आत्म विश्वास बढ़ा है।

इन चार गांवों में चलाया जा रहा है अभियान

1. आबू रोड के गांधीनगर क्षेत्र : इस क्षेत्र में ज्यादातर अशिक्षित और आर्थिक रूप से कमजोर तबके के परिवार निवास करते हैं। इसे देखते हुए इस क्षेत्र को चुना गया। क्षेत्र में 25-25 महिलाओं के ग्रुप बनाए गए हैं। प्रत्येक ग्रुप में एक महिला को अध्यक्ष बनाया गया है जो अपने ग्रुप में जुड़ीं महिलाएं की समस्याओं को नोट कर उनका उचित समाधान काउंसलर द्वारा कराती हैं।

2. लूनियापुरा गांव : यहां महिलाओं के दो ग्रुप बनाए गए हैं जिसका नाम नारी शक्ति रखा गया है। यहां तीन साल से जारी वर्कशॉप का असर है कि अब महिलाएं निडरता के साथ इसमें भाग लेती हैं। घरेलू समस्याओं को एक-दूसरे का साथ सांझा करने से उन्हें समाधान के बेहतर विकल्प मिल जाते हैं। यहां महिलाओं में आपस में इतनी एकता हो गई है कि अब कोई भी पुरुष किसी महिला पर हाथ नहीं उठा सकता है।

3. मोरथला गांव: पहले ग्रुप में कम ही महिलाएं आती थीं लेकिन अब धीरे-धीरे जागरूकता आई है और उन्हें सप्ताह में होने वाली वर्कशॉप का इंतजार रहता है। वह बड़े ही उत्साह के साथ भाग लेने लगी हैं। पहले की अपेक्षा साफ-सफाई की प्रवृत्ति बढ़ी है और रचनात्मक कार्यों की ओर रुझान बढ़ा है। रेडियो मधुबन के प्रयासों की दिल से सराहना करती हैं।

4. उमरनी गांव: उमरनी एकमात्र ऐसा गांव है जहां महिला और पुरुषों के दो ग्रुप बनाए गए हैं। महिलाओं के ग्रुप का नाम महाकाली रखा गया है। टीम में दो लोगों में एक अध्यक्ष और सचिव को नियुक्त किया गया है। गांव में होने वाली वर्कशॉप में महिला और पुरुष दोनों ही बड़े ही उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

अभियान का उद्देश्य

- महिलाओं को हिंसा को लेकर जागरूक करना।
- आत्मविश्वास पैदा कर सशक्त बनाना।
- गलत व्यवहार के लिए न कहने की हिम्मत और साहस की भावना का विकास करना।
- अपने अधिकारों को लेकर सजग और जागरूक करना।
- बच्चों के बेहतर लालन-पालन और शिक्षा को लेकर जागरूक करना।
- रचनात्मक कार्यों से अपनी आय के स्त्रोत को बढ़ाना।
- साफ-सफाई को बढ़ावा देना।
- सकारात्मक एक्टीविटीज के माध्यम से महिलाओं में रचनात्मकता का विकास करना।
- समूह के माध्यम से महिलाओं में एक-दूसरे की समस्याओं में मदद करने के लिए प्रेरित करना।

गणका गांव की महिलाओं ने पेश की एकता की मिसाल...

अभियान के तहत आदिवासी गणका गांव में भी महिलाओं का एक ग्रुप बनाया गया है। आज स्थिति ये है कि यहां की सभी महिलाएं ग्रुप से जुड़ चुकी हैं। यदि किसी महिला के साथ अत्याचार या मारपीट होती है तो वह महिला ताली बजाती है। ताली की आवाज सुनकर गांव की अन्य महिलाएं इक्कट्ठी हो जाती हैं। इस तरह महिलाओं में एकता देखकर अब यहां के पुरुषों ने महिलाओं के साथ मारपीट करना छोड़ दिया है।

रेडियो से भी कर रहे जागरूक

हिंसा को नो अभियान के तहत मधुबन रेडियो पर भी घरेलू हिंसा के प्रति जागरूकता वाले कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इसमें समय प्रति समय विषय विशेषज्ञों को बुलाकर महिलाओं से जुड़ीं समस्याओं और उनका समाधान पेश किया जाता है। महिलाओं को जागरूक करने के लिए मोटिवेट किया जाता है। आबू रोड क्षेत्र के आसपास के गांवों में ग्रामीण बड़े ही उत्साह के साथ रेडियो मधुबन नियमित रूप से सुनते हैं।

महिलाएं जागरूक हो रही हैं

महिलाएं अपनी जिम्मेदारियों को जरूर समझें, तकनीकी रूप से भी आत्मनिर्भर बनें ताकि वे अपनी बच्चियों को साइबर क्राइम जैसे अपराधों से बचा सकें। हिंसा को नो अभियान के बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। इन गांवों में पहले जहां महिलाएं घूंघट से बाहर नहीं आती थीं वह आज वर्कशॉप में खुलकर अपनी बात रखती हैं। यह देखकर बेहद खुशी होती है कि जिस उद्देश्य के साथ अभियान शुरू किया गया था वह सपना साकार हो रहा है।

- बीके कृष्णा बहन, प्रोजेक्ट हैड, हिंसा को नो अभियान, रेडियो मधुबन, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

हेल्पलाइन नंबर जारी किया

महिलाओं को बताया जाता है कि जरूरत होने पर निर्भया स्क्वॉड की मदद लें। कानून की सहायता कैसे ले सकते हैं। आबू रोड क्षेत्र में महिलाओं के लिए हेल्पलाइन नंबर 9530431405 जारी किया गया है। कोई भी महिला अपने साथ हो रही हिंसा की शिकायत इस पर कर सकती है।

- सुलोचना बहन, निर्भया टीम, सिटी थाना, आबू रोड

कार्यक्रम से दे रहे हैं संदेश

महिलाओं को रेडियो मधुबन पर प्रसारित होने वाले हिंसा को नो कार्यक्रम से जागरूकता का संदेश दिया जा रहा है। साथ ही इसमें श्रोताओं के आने वाले कॉल पर उनकी समस्याओं का समाधान किया जाता है।

- बीके ऊषा, आरजे, रेडियो मधुबन, हिंसा को नो अभियान की सदस्य

ब्रह्माकुमारी ने स्वास्थ्य, शिक्षा, समृद्धि और संस्कृति के उत्कर्ष के लिए मुहिम छेड़ी है: मुख्यमंत्री

जहां शांति स्थापित होगी, वहां हमारा भविष्य होगा और देश समृद्धि की ओर जाएगा: सीएम

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में आयोजित स्वर्णिम राजस्थान कार्यक्रम में शिरकत की। इसके पूर्व संस्थान द्वारा लगाई गई गोकुल गांव- सर्वांगीण विकास अभियान, जल जन अभियान और श्रीअन्न मिलेट्स अभियान प्रदर्शनी का शुभारंभ कर अवलोकन किया।

डायमंड हाल में सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था ने लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा, समृद्धि, संस्कृति में उत्कर्ष के लिए एक मुहिम छेड़ी है। श्रीअन्न को कैसे बचाया जा सकता है उसकी लिए संस्था ने अभियान शुरू किया है। इससे निश्चित रूप से लोगों को मिलेट्स के बारे में जानकारी मिलेगी। जल जन अभियान से लोगों को जल संरक्षण के बारे में जानने को मिलेगा। जल संरक्षण आज की जरूरत है। इन सभी विषयों को लेकर संस्था जो कार्य कर रही है उसके लिए साधुवाद। कार्यक्रम में विशेष रूप से राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी मौजूद रहीं।

यहां आकर सकारात्मक ऊर्जा मिलती है...

मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि आज मेरे लिए बहुत गौरव और हर्ष का विषय है कि शांतिवन के आध्यात्मिक वातावरण में मैं आज यहां आया हूं। मेरा यहां कई बार आना हुआ है। यहां की व्यवस्था और संचालन देखकर कह सकता हूं कि जहां शांति स्थापित होगी, वहां ही हमारा भविष्य होगा। वहीं हमारा प्रदेश और देश समृद्धि की ओर जाएगा। यहां आकर के मुझे बहुत सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। मन को बहुत शांति का अनुभव होता है। यहां के भाई-बहनों का अनुशासन और समर्पण सराहनीय है। ब्रह्माकुमारीज जैसी आध्यात्मिक संस्थाएं आगे आकार ग्रीन एनर्जी, यौगिक खेती, जैविक खेती के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। ऐसी संस्थाओं के काम करने से निश्चित रूप से हमारा देश आगे बढ़ेगा। अच्छे वातावरण से देश को एक नई ऊंचाई मिलती है।

वर्तमान नया इनोवेशन का समय है

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में अमृत काल का समय चल रहा है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि देश को आगे बढ़ाने के लिए एक सकारात्मक पहल होनी चाहिए। एक सकारात्मक वातावरण बने। सकारात्मक वातावरण के आधार पर नए-नए इनोवेशन हों। उसके आधार पर प्रदेश को एक नई ऊंचाई पर ले जाने का आधार बनें। हमारा देश सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और मानसिक चेतना के विकास के लिए इस तरह के इनोवेशन होते रहते हैं। हमारा देश एक नया इतिहास लिखने की ओर बढ़ा है। हमारा युवा नशा की ओर बढ़ने लगा है। संस्था ने सरकार के साथ मिलकर हर क्षेत्र में कार्य किया है और कर रहे हैं। प्रधानमंत्री कहते हैं कि आम व्यक्ति उसकी सोच में परिवर्तन और वह आगे क्या कर सकता है तो वह अपना विचार हमें दे सकता है। यदि उसका विचार हितकर है तो उसे हम इम्प्लीमेंट करेंगे।

आपका छोटा सा प्रयास किसी के जीवन में बदलाव ला सकता है

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सभी इस देश और प्रदेश के नागरिक हैं हम उसका एहसास करें कि हमारा नागरिक होने के प्रति कर्तव्य क्या है? ऐसे एहसास के साथ हमारे पड़ोस, मोहल्ले और गांव में ऐसे व्यक्ति जो अंतिम पायदान पर खड़ा है उसकी मदद के लिए आगे आएं। एक अच्छे नागरिक बनने के कर्तव्य की ओर बढ़ें। हम उपयोगी बनें। हमारा छोटा सा कदम उसके जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार...

- स्वच्छ भारत मिशन राजस्थान के ब्रांड एंबेसेडर एवं वन संरक्षण, महिला सशक्तिकरण में देशभर में ऐतिहासिक कार्य करने वाले जयपुर जिले की ग्राम पंचायत जाहोटा के सरपंच श्याम प्रताप राठौर ने कहा कि आज हमारा गांव जाहोटा देशभर में महिला सशक्तिकरण के लिए जाना जाता है। हमने अपनी पंचायत में 23 हजार पेड़ लगाए हैं। 108 जल संरक्षण के लिए तालाब, बांध बनाए हैं। सामूहिक प्रयासों से आदर्श गोकुल गांव बनाने के लिए जीजान से जुटे हैं। यह संभव हुआ है तो स्व के परिवर्तन से। जब तक हम खुद को नहीं बदलेंगे तब तक हम समाज, देश और गांव को नहीं बदल सकते हैं।
- पुणे से आईं ग्रीन एनर्जी फाउंडेशन की फाउंडर शर्मिला ओसवाल ने कहा कि हमारे देशी और भारतीय अन्न मिलेट्स को आज नई पहचान मिली है। राजस्थान में पानी की कमी रहती है ऐसे में यहां बाजरे का उत्पादन करने से किसान भाई अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। जब आप कोई कार्य पूरी लगन और शिद्दत से करते हैं तो उसकी सराहना जरुर मिलती है।
- कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि परमात्मा के घर में मुख्यमंत्री का स्वागत वंदन है। आशा है कि आपके नेतृत्व में राजस्थान विकास की नई ऊंचाईयों को छुएगा।
- जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा दीदी ने गहन राजयोग मेडिटेशन की अनुभूति कराई। बीकानेर से आईं बीके कमल दीदी ने विचारों का महत्व विषय पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की झलकियां

- मुख्यमंत्री शर्मा ने अपने संबोधन में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को जीवन के 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर बधाई देते हुए कहा कि उस समय में जब संघर्ष भी रहा होगा, ऐसे समय में इतना बड़ा संगठन खड़ा करना और यहां तक ले जाना बड़ी बात है।
- मानपुर हवाई पट्टी पर भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों और ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, पीआरओ बीके कोमल भाई ने स्वागत किया।
- मेडिकल विंग की सेवा रिपोर्ट और राजऋषि ग्राम सेवा योजना की रिपोर्ट का उद्घाटन किया।
- समारोह में मुख्यमंत्री और मंत्री ओटाराम देवासी का मुकुट, शॉल और मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया गया।
- दीप प्रज्जवलित कर मुख्यमंत्री शर्मा, मंत्री देवासी और मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया।
- मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संचालन शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका बहन और वरिष्ठ राजयोगी बीके सुधीर भाई ने किया।
- मुख्यमंत्री ने कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित भारतीय मजदूर संघ के 25वें राष्ट्रीय अधिवेशन को भी संबोधित किया।

यौगिक खेती समय की जरूरत

- राजऋषि ग्राम प्रदर्शनी, जल जन अभियान और श्रीअन्न अभियान का मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ
- राजस्थान और गुजरात में जल जन अभियान के माध्यम से कई कुंओं और तालाबों का संरक्षण किया

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन पहुंचे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सबसे पहले राजऋषि ग्राम प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। इसमें संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा गोकुल ग्राम की परिकल्पना को दिखाया गया कि कैसे गांव का सर्वांगीण विकास संभव है। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यौगिक खेती से किसानों को निश्चित रूप से लाभ होगा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए जा रहे गोकुल गांव अभियान से गांवों की तस्वीर बदलेगी। जल जन अभियान और श्रीअन्न (मिलेट्स) अभियान की उन्होंने सराहना करते हुए इसे जनउपयोगी बताया।

प्रदर्शनी में इनके लगाए गए स्टाल

मेडिकल विंग- मेडिकल विंग द्वारा मार्च 2023 से देशव्यापी नशामुक्त भारत अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत अब तक देश के 28 राज्यों में सात हजार से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। लाखों लोग अभियान से जुड़कर नशामुक्ति का संकल्प ले चुके हैं। व्यापक स्तर पर अभियान को लेकर लोगों की सराहना मिल रही है। अभियान के तहत राजस्थान सहित देश के अन्य प्रदेशों में की गई सेवाओं की झलक दिखाई गई।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग- कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा राजस्थान सहित देश के अन्य प्रदेशों में गोकुल गांव- सर्वांगीण विकास अभियान चलाया जाएगा। अभियान के तहत गांवों में ग्रामीणों को स्वच्छता से लेकर जैविक-यौगिक खेती, जैविक खाद निर्माण, नशामुक्ति, स्वस्थ जीवनशैली, मानसिक स्वास्थ्य, राजयोग मेडिटेशन को लेकर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। गांवों के सर्वांगीण विकास का रोडमेप तैयार किया जाएगा। प्रदर्शनी में प्रभाग द्वारा गोकुल गांव की परिकल्पना और यौगिक खेती का मॉडल पेश किया गया।

जल जन अभियान- संस्थान द्वारा जल संरक्षण और प्राचीन कुआं, बावड़ी, तालाब के जीर्णोद्धार, संरक्षण के लिए चलाए जा रहे जल जन अभियान के तहत नए सेवा कार्यों का शुभारंभ भी मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। अब तक देश के अलग-अलग कोने में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तालाब, कुंओं का जीर्णोद्धार किया गया है। तालाबों को गोद लेकर उन्हें संवारा गया है। भविष्य में भी राजस्थान में जल जन अभियान को गति देने के लिए कार्ययोजना बनाई गई है।

श्रीअन्न मिलेट्स अभियान- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देशभर में श्रीअन्न (मिलेट्स) को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक संस्थाओं से लेकर सरकारी स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। इसे देखते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने भी श्रीअन्न के उपयोग के बढ़ावा देने के लिए कार्ययोजना बनाई है। इसके तहत श्रीअन्न मिलेट्स अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान के तहत लोगों को प्रैक्टिकल में श्रीअन्न से बने व्यंजन बनाना सिखाया जाएगा। उन्हें श्रीअन्न का महत्व बताया जाएगा।

संपादकीय

मैं शिव की शक्ति हूं... की गाथा को चरितार्थ करतीं ब्रह्माकुमारियां

नारी नरक का द्वार नहीं सिर का ताज है। नारी अबला नहीं सबला है। शक्ति स्वरूपा है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और नारी के उत्थान के संकल्प के साथ उसे समाज में खोया सम्मान दिलाने, भारत माता, वंदे मातरम् की गाथा को सही अर्थों में चरितार्थ करने वर्ष 1937 में उस जमाने के हीरे-जवाहरात के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज कृपलानी ने नारी सशक्तिकरण की नींव रखी। नारी उत्थान को लेकर उनका दृढ़ संकल्प ही था कि उन्होंने अपनी सारी जमीन-जायजाद बेचकर एक ट्रस्ट बनाया और उसमें संचालन की जिम्मेदारी नारियों को सौंप दी। इतने बड़े त्याग के बाद भी खुद को कभी आगे नहीं रखा। लोगों में परिवारवाद का संदेश न जाए इसलिए बेटी तक को संचालन समिति में नहीं रखा। वर्ष 1950 में संस्थान का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू बनाया गया। जहां से बहुत ही छोटे स्तर पर विधिवत भारत सहित विश्वभर में सेवाओं की शुरुआत की गई। पहले संगठन का नाम ओम मंडली था। 1950 में बदलकर इसे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय किया गया। उस वक्त मात्र 350 लोग ही इसके समर्पित सदस्य थे। ब्रह्माकुमारी संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा और एकमात्र संगठन है। यहां मुख्य प्रशासिका से लेकर प्रमुख पदों पर महिलाएं ही हैं। नारी सशक्तिकरण का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि यहां के भोजनालय में भाई भोजन बनाते हैं और बहनें बैठकर भोजन करती हैं। संगठन की सारी जिम्मेदारियों को बहनें संभालती हैं और भाई उनके सहयोगी के रूप में साथ निभाते हैं।

बोध कथा/जीवन की सीख

वाणी पर संयम

एक पहलवान रास्ते से जा रहा था। सामने से आते हुए एक दूसरे व्यक्ति ने अचानक उससे कहा कि सूजा हुआ ऐसा शरीर किस काम का। जहां बैठते हो, दो–तीन आदमियों की जगह रोक लेते हो। इतना सुनते ही पहलवान ने उस व्यक्ति को जोर से थप्पड़ मार

दिया तो उसकी बत्तीसी ढीली हो गई। मुंह से खून निकल आया। इसके बाद उसने चुपचाप अपनी राह पकड़ ली। तभी एक तीसरा व्यक्ति मिला। उसने पूछा कि यह क्या हुआ भाई, कहीं गिर पड़े क्या? इस पर पिटाई खाने वाले व्यक्ति ने मुंह से आ रहे खून को पोंछते हुए कहा 'नहीं, गिरा नहीं, थोड़ी–सी जबान चल गई और व्यर्थ में काम बढ़ा लिया। उसने पूरी कहानी सुनाई। इसी तरह हमारे घर और समाज में अधिकांश लड़ाई–झगड़ों का कारण हमारी जबान पर नियंत्रण नहीं होना है। कुछ लोग आदी हो जाते हैं। कुछ न कुछ कड़वा–खारा बोलते रहते हैं और किसी न किसी से उनकी भिड़ंत होती रहती है।

कहने का भाव यही है कि वाणी के दोनों पक्ष हैं अच्छा और बुरा। कुछ लोग वाणी के इतने मधुर होते हैं कि सहज ही वे लोगों के आत्मीय बन जाते हैं। अच्छा बोलने में कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। लेकिन कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें दुश्मनों की संख्या बढ़ाने में आनंद आता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो दूसरों को कटु वचन तो नहीं बोलते, किंतु मुंह से अपशब्द निकालने की आदत होती है। सामान्य बातचीत में भी वे भद्दे शब्दों का प्रयोग करते हैं। कुछ भद्दे शब्द उनका तकियाकलाम बन जाते हैं। इसलिए हमारे कुछ भी बोलने के पहले उन शब्दों को मन ही मन अच्छे से नाप-तौल लेना चाहिए। क्योंकि इतिहास में कई युद्ध सिर्फ वाणी पर संयम नहीं रख पाने के कारण लड़े गए हैं। लोगों को राजपाट गंवाना पड़ा है।

संदेश: हम जो सोचते हैं, वैसा ही हमारी वाणी के द्वारा निकलता है। इसलिए सबसे जरूरी है कि हमारी सोच के स्तर को परखा जाए। अच्छे लोगों की संगत करेंगे, अच्छा साहित्य पढ़ेंगे तो निश्चित रूप से मन में अच्छे विचार आएंगे। अच्छे विचार, अच्छी वाणी, मीठी वाणी बन जाएंगे। जीवन में सबसे अहम है अपनी सोच को नित सकारात्मक बनाना।

मेरी कलम से

बीके छाया, व्यापारी, शिव कलेक्शन शॉपिंग मॉल की डायरेक्टर, चंद्रपुर, महाराष्ट्र

शिव बाबा का साथ हर पल महसूस होता है, मेरे कारोबार के असली मालिक वही

व्यापार के लिए घर से बाहर जाने पर कभी डर नहीं लगता

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

मैं बचपन से ही बहुत पूजा-पाठ करती थी। शुरू से मन में था कि इस जन्म में भगवान को पाना है। हमारे घर पर सेवाकेंद्र से बीके नरेंद्र भाई समय प्रति समय ईश्वरीय साहित्य लेकर आते थे और ज्ञान चर्चा करते थे। लेकिन मैंने कभी रुचि नहीं ली। उनके आग्रह पर वर्ष 2013 में ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय माउंट आबू आना हुआ। यहां तीन दिन आध्यात्मिक ज्ञान सुनने के बाद मेरा जीवन बदल गया। मुझे सत्य का ज्ञान हुआ कि इतने दिन तक मैंने इस ज्ञान को क्यों नहीं सुना। इसके बाद घर जाकर बीके कुंदा दीदी से सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स किया। कोर्स के दौरान ही मेरे जीवन के सारे सवालों को जवाब मिल गए। मेरी तलाश पूरी हो गई। तब से लेकर में ब्रह्माकुमारी परिवार की सदस्य बन गए।

पिछले 12 साल से बिना अलार्म के सुबह 3.30 बजे नींद खुल जाती है। परमात्मा की कृपा से कारोबार में दिन दूनी, रात चौगनी तरक्की मिल रही है। मैं व्यापार के सिलसिले में ज्यादातर बाहर ही रहती हूं, अकेले जाना और होटल में रहना एक महिला के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। लेकिन परमपिता शिव बाबा का मुझे हर पल साथ होने का एहसास होता है। जीवन में कोई समस्या आने वाली होगी तो उसका एहसास पहले ही हो जाता है। बाबा मुझे हर विघ्न-बाधा से बचा लेता है। मैं खुद को शिव की शक्ति महसूस करती हूं। कभी भी घर से अकेले बाहर जाने में डर नहीं लगता है। राजयोग मेडिटेशन कोर्स के पहले मुझे बहुत गुस्सा आता था। बात-बात पर अशांत हो जाती थी लेकिन अब मन शांत हो गया है।

मेरे शॉपिंग माल (चिनूर गांव) में पूरे समय ईश्वरीय गीत चलते रहते हैं। शिव बाबा को ही इसका मालिक बनाया है। मैं तो कारोबार को निमित्त समझकर संभालती हूं। इस ज्ञान से मेरे जीवन में परिवर्तन आया है कि कितनी भी बड़ी बात हो जाए उसे बिंदू लगा दो। नथिंग न्यू। हम बातों को जितना पकड़कर रखते हैं वह उतनी हमें परेशान करती हैं। जीवन में जो चाहा बाबा ने उससे बढ़कर दिया है। इतना कारोबार संभालते हुए भी खुद को हल्का महसूस करती हूं। मैं रोज 18 घंटे काम करती हूं लेकिन कभी भी थकान महसूस नहीं होती है। कारोबार के साथ घर के कामकाज संभालना दिनचर्या में शामिल है। आध्यात्मिक ज्ञान से हमें खुद की शक्तियों और विशेषताओं का आभास हो जाता है। हमारी क्षमताओं में वृद्धि हो जाती है। मेरी सभी मातृ शक्तियों से यही अनुरोध है कि अपने जीवन में राजयोग ध्यान को शामिल करें और उसे स्वर्ग सा सुंदर बनाएं। घर में ही प्यारे बाबा का सेवाकेंद्र बनाया है। अब तो यही प्रयास रहता है कि जैसे मेरा जीवन बदला है ऐसे ही अनेक आत्माओं का कल्याण कर सकूं।

योग सत्कर्म द्वारा जीवन दर्शन से साक्षी भाव

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 68

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आबू रोड (राजस्थान)। व्यावहारिक जीवन की कर्तव्यनिष्ठ अवस्था व्यक्तिगत स्तर पर कर्मक्षेत्र में पदार्पण के लिए मानव जाति को अभिप्रेरित करती है और वह स्वयं को संपूर्ण तत्परता से कार्य - व्यवहार में संलग्न भी करता है लेकिन आत्मिक पुरुषार्थ सदा अंतर्मन को सचेत करते हुए आत्मा के स्वमान , स्वरुप एवं स्वभाव में बने रहने की सदप्रेरणा प्रदान करने की भूमिका निभाता है। आत्मा की वैभव सम्पन्नता का संपूर्ण स्वरुप आत्मानुभूति के सानिध्य में स्वयं की निरन्तरता का स्थायित्व ढूंढने के लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ से आत्महित चिंतन के प्रति निष्ठावान रहकर चेतना को पवित्रता की बोधगम्यता से - परिवर्तन, परिणाम,परिमार्जन, परिवर्धन एवं परिष्कार के गुणात्मक अनुक्रम में मनन-चिंतन की क्रियाविधि को आत्मसात करके परमात्मानुभूति की सर्वोच्चता को प्राप्त होता है। मानव जीवन के मध्य विचित्र किन्तु सत्य की प्रभावना के प्रेरणादायी स्वरुप को प्रतिपादित करने के लिए आत्मा को योग के सत्कर्म में संलग्न रहकर, आत्म जगत की वास्तविकता जो वास्तविक ही है, जिसकी प्राप्ति, स्वानुभूति अथवा वहां तक पहुंचने के लिए प्राणी मात्र प्रत्येक जन्म में प्राय: भागीरथ प्रयत्न हेतु गतिशील रहता हैं ।

कर्मयोगी स्वरुप में योग सत्कर्म : जीवन के दार्शनिक पक्ष व्यक्तित्व को परिष्कृत स्वरुप में स्थापित करने हेतु कर्मयोगी बनने की अभिप्रेरणा प्रदान करते हुए सत्कर्म की प्रवृत्ति को निरन्तर विकसित करने की व्यावहारिकता को आत्मसात करके उपराम स्थिति के निर्माण के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं । स्वचिंतन की गतिशील प्रक्रिया आत्मिक उन्नति के स्वरुप में आत्महित के पोषण हेतु सदा सहायक होती है और कर्मयोग में समर्पणता के प्रति गहन श्रद्धा एवं आस्था को संपूर्ण मनोयोग से अभिव्यक्त करती हैं । योगी जीवन के गरिमामयी पक्ष की विवेचना करने पर कर्मयोग की प्रमुखता सहज ही प्रतिपादित हो जाती है जिसमें एकाग्र मनोवृत्ति के साथ ध्यान पूर्वक कर्मगत स्थितियों की संपूर्णता का संपन्न स्वरुप परिलक्षित होता है । कर्मयोगी स्वरुप में अनुभवी अर्थात कर्म के प्रतिफल से मुक्त रहकर श्रेष्ठतम, संपूर्ण जीवनशैली में सन्निहित व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अस्तित्व सम्पन्नता का पवित्र प्रतिबिम्ब मानव आत्माओं को सत्कर्म के अनुकरण-अनुसरण हेतु सदा सदप्रेरणा से अनुप्राणित करता है। आत्म वैभव की पूर्णता का पवित्रतम कार्य, कर्मयोगी स्वरुप में योग सत्कर्म की व्यावहारिक क्रियाविधि के द्वारा संपन्न होता है जिसमें आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति का रहस्य समाहित रहता है ।

जीवन दर्शन की मूल्यपरक अवधारणा : सामाजिक जीवन की गतिशीलता का विराट स्वरुप जब मूल्यपरक अवधारणा की नीतिगत व्यवस्था के प्रति आत्मनिष्ठा से संबद्ध होता है तब जीवन दर्शन की गहनता में आत्मगत उच्चता का साक्षात्कार आत्मानुभूति के माध्यम से सुनिश्चित हो जाता है । व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया के अंतर्गत निर्धारित मनोगत से संबंधित भाव जगत का सूक्ष्म विश्लेषण अंतर्मन में -'मन' को 'नम' के विनम्र स्वरुप में रुपान्तरित करके नवीन चिंतन हेतु मनोवैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है जिसमें मानवीय चिंतनशीलता की प्रगाढ़ता का प्रस्फुटन पूर्णत: दार्शनिक बोधगम्यता के समदृश्य परिलक्षित होने लगता है । जीवन के उच्चतम मूल्य के रहस्य को बाह्य परिदृश्य के अंतर्गत प्रकट करने में आन्तरिक परिवेश के दार्शनिक चिंतन का विशिष्ट योगदान होता है जो लौकिक , अलौकिक एवं पारलौकिक सत्ता से विकसित , अस्तित्व गुण मूल्य के सहसंबन्ध की पवित्रता को पूर्णत: प्रतिपादित कर देता है । धार्मिक अनुष्ठान के सन्दर्भ एवं प्रसंग में आचरण की स्थिति से धारणात्मक आस्था की सृष्टि को सम्मानजनक स्वरुप में स्वीकृति प्रदान करके धर्मगत मूल्यपरक सिद्धांत का व्यावहारिक अनुपालन किया जाना ही जीवन दर्शन का वास्तविक यथार्थ बोध है । आध्यात्मिक जीवन की पारदर्शी , पवित्र और योगी बनने के साथ आत्मिक मूल्य निष्ठता को निभाते हुए आत्म एवं परमात्म दर्शन की व्यापकता को सम्पूर्णता से सम्पन्नता के परिवेश में सहज ही परिवर्तित कर देता है ।

साक्षीभाव पुरुषार्थ द्वारा उपराम स्थिति : आत्म जगत की गुण एवं शक्ति संपन्न स्थिरता का पक्ष सदा साक्षी स्वरुप के भावजगत से गतिशीलता के व्यवहार में परिवर्तित होता है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि में आत्मा के अजर, अमर, अविनाशी, अचल-अडौल एवं स्थितप्रज्ञ का नैसर्गिक धर्म सन्निहित रहता है। व्यावहारिक जीवन की कर्तव्यनिष्ठ अवस्था व्यक्तिगत स्तर पर कर्मक्षेत्र में पदार्पण के लिए मानव को अभिप्रेरित करती है। वह स्वयं को संपूर्ण तत्परता से कार्य व्यवहार में संलग्न भी करता है लेकिन आत्मिक पुरुषार्थ सदा अंतर्मन को सचेत करते हुए आत्मा के स्वमान, स्वरुप, स्वभाव में रहने की सद्प्रेरणा प्रदान करने की भूमिका निभाता है ।

आत्मा की वैभव सम्पन्नता का संपूर्ण स्वरुप: आत्मानुभूति के सानिध्य में स्वयं की निरन्तरता का स्थायित्व ढूंढने के लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ से आत्महित चिंतन के प्रति निष्ठावान रहकर चेतना को पवित्रता की बोधगम्यता से परिवर्तन, परिणाम, परिमार्जन, परिवर्धन एवं परिष्कार के गुणात्मक अनुक्रम में मनन-चिंतन की क्रियाविधि को आत्मसात करके परमात्मानुभूति की सर्वोच्चता को प्राप्त होता है। जीवन के मध्य विचित्र किन्तु सत्य की प्रभावना के प्रेरणादायी स्वरुप को प्रतिपादित करने के लिए आत्मा को योग के सत्कर्म में संलग्न रहकर, आत्म जगत की वास्तविकता - जो वास्तविक ही है। जिसकी प्राप्ति और वहां तक पहुंचने के लिए प्राणी मात्र प्रत्येक जन्म में प्राय: भागीरथ प्रयत्न हेतु गतिशील रहता हैं। जीवन की प्रवृत्ति से निवृत्ति के मार्ग पर आगमन हेतु आत्मा को साक्षी भाव के उच्चतम स्वरुप में स्थापित करना परमावश्यक है तभी आत्मजगत के प्रति आत्मानंद अर्थात उपराम स्थिति की महान उपलब्धि द्वारा संपूर्ण न्याय की अवधारणा को नैतिक रुप से सिद्ध किया जा सकता है ।

"धर्म का काम किसी का मत बदलना नहीं, मन बदलना है।"

\- गोस्वामी तुलसीदास

"अहंकार मनुष्य का बहुत बड़ा दुश्मन है, वह सोने के हार को भी मिट्टी बना देता है।"

\- महर्षि वाल्मीकि

महाशिवरात्रि पर विशेष...

दुनियाभर में है परमात्मा शिव की यादगार

सर्वोच्च सत्ता: विश्वभर के कोने-कोने में की गई है परमात्मा शिव की आराधना

आबू रोड। केवल भारत ही नहीं विश्व के कोने-कोने में परमपिता शिव परमात्मा की यादगार मिलती है। चाहे चीन, मिस्र, जापान, यूनान सभी देशों में शिवलिंग की पूजा व ध्यान किसी न किसी रूप में किया गया है। भारतवर्ष में भी 12 ज्योतिर्लिंगम भी परमात्मा शिव की ही यादगार में स्थापित किए गए हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग आज भी महान तीर्थ स्थान के रूप में माने जाते हैं। भारत के चारों कोनों में शिवलिंग की पूजा अवश्य ही होती है। उनके मंदिरों के जो नाम हैं वो भी गुणवाचक और कर्तव्यवाचक हैं। परमात्मा की महिमा के रूप में मंदिरों के नाम भी उसी अनुसार रखे हुए हैं। यदि जंगल को कलम और समुद्र को स्याही बना दिया जाए तो भी हम परमपिता परमात्मा की महिमा को लिख नहीं सकते हैं।

1. सोमनाथ

सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे, कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी जाती है। चाहे वह पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की मूर्तियां स्थापित न भी करें तो फिर भी पूजा-पाठ प्रार्थना इत्यादि अवसरों पर मंदिरों व धार्मिक स्थानों पर परमात्मा की स्मृति के रूप में दीपक अथवा ज्योति अवश्य जलाते हैं।

2. महाकालेश्वर

मध्यप्रदेश के उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर महाकालेश्वर मंदिर है। यह विश्व का एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है। यहां प्रतिदिन सुबह की जाने वाली भस्मारती विश्वभर में प्रसिद्ध है। परमात्मा को कालों का काल महाकाल भी कहा जाता है। वह सभी के कलह-क्लेश को मिटाने वाले हैं,दुख हरने वाले हैं।

3. काशी विश्वनाथ

उत्तर प्रदेश के काशी (बनारस) में काशी विश्वनाथ मंदिर है। यह शिवलिंग सबसे पुराने शिवलिंग में से एक है। सारे विश्व का मालिक एक परमात्मा ही हैं। अतः विश्वपति अथवा विश्व का सृजनहार होने के कारण उन्हें विश्वनाथ के नाम से भी जाना जाता है। वहीं विश्व की सभी आत्माओं के नाथ अथवा जनक, परमपिता परमात्मा हैं।

4. मल्लिकार्जुन

आंध्रप्रदेश के कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नाम के पर्वत पर मल्लिकार्जुन मंदिर है। इसे दक्षिण के कैलाश के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने शिवानंद लहरी की रचना यही की थी। यह मंदिर भी ज्योतिर्बिंदू परमपिता परमात्मा की स्मृति दिलाता हैं जो परमात्मा का ही प्रतीक है।

5. त्रयम्बकेश्वर

महाराष्ट्र के नासिक जिले में गोदावरी नदी के तट पर त्रयम्बकेश्वर मंदिर है। कहा जाता है कि त्रयम्बकेश्वर में ब्रह्मा, विष्णु और शंकर, शिवलिंग के रूप में समाहित हैं। इससे स्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा शिव तीनों देवों के भी देव महादेव, रचयिता त्रिमूर्ति हैं। परमात्मा शिव इन तीनों देवताओं के द्वारा ही सृष्टि की स्थापना, पालना और विनाश का कार्य कराते हैं।

6. वैद्यनाथ

झारखंड में देवघर के पास स्थित वैद्यनाथ मंदिर है। दुखों में ग्रस्त दुनिया को सुखमय बनाने और सर्व आत्माओं के दुख हरने के कारण परमात्मा को वैद्यनाथ के नाम से भी जाना जाता है। वह तो हम सभी आत्माओं की कुंडली जानते हैं और हमें दुखों से मुक्त कर अपने लोक ले जाते हैं। एक परमात्मा ही हमारे सारे रोग, शोक, दुख, पीड़ा और जन्मोजन्म के पापों के हरकर हमें नई सतयुगी दुनिया में ले जाने का रास्ता बताते हैं।

शिव के साथ रात्रि का क्या संबंध हैं?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्रायः जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन एक परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि के रूप में मनाई जाती है। इसका अर्थ है कि परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह कोई लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता है। कल्याणकारी विश्व पिता शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञावाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्यवाचक रूप से मनाई जाती है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए हुए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अंतिम मास होता है और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन शिवरात्रि को घोर अज्ञान-अंधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पांत के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के विनाश से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके दुःख और अशांति को हरा था।

परमात्मा का स्मरण चिह्न है शिवलिंग

शिव का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिंह्न। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रुप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। उनकी ही स्मृति में मंदिरों में ज्योति को जलाते हैं।

सर्व के नाथ हैं शिव

परमपिता परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम क्यों कहा? क्योंकि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरुप निराकार हैं। जिनका अपना कोई शरीर नहीं है, जो सदा ज्योति के समान प्रकाशमान हैं। परमात्मा को ज्योति स्वरुप का एक लिंग रुप बनाकर मनुष्य के सामने रखा ताकि मनुष्य अपनी भावनाएं अर्पित कर सकें, पूजा कर सकें। भारत में भी मंदिरों के नाम के पीछे भी नाथ या ईश्वर शब्द जुड़ा है। भोलेनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, बबूलनाथ, अमरनाथ आदि। ईश्वर के रुप में-गोपेश्वर, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, रामेश्वर, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर सर्व का नाथ, ईश्वर एक परमात्मा शिव हैं।

वर्तमान कलियुग का सारा काल ही महारात्रि

वर्तमान में कलियुग का अंतिम चरण चल रहा है। यह सारा काल, रात्रि अथवा महारात्रि ही है। परमात्मा शिव संसार को पावन और सुखी बनाने के लिए सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अत: हमारा कर्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम पवित्रता का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान सेवा करें। यही सच्चा पाशुपत व्रत है। इसका फल मुक्ति और जीवन-मुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब विकारों रुपी विष से नाता तोड़कर परमात्मा शिव से अपना नाता जोड़े।

7. नागेश्वर

गुजरात के द्वारिका में नागेश्वर मंदिर स्थित है। धर्म शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव को नागों के देवता के रूप में भी माना गया है। इसलिए इस शिवलिंग का नाम नागेश्वर पड़ा। वह सर्व आत्माओं के सर्परूपी विषय विकारों, बुराइयों, कुसंस्कारों और अवगुणों को दूर कर पवित्र बनने की शिक्षा देते हैं। इसलिए शिव को नागेश्वर भी कहा जाता है।

8. रामेश्वर

तमिलनाडु के रामनाथपुर में रामेश्वर मंदिर स्थित है। यह स्थान चार धामों में से एक है। श्रीराम के द्वारा स्थापित होने के कारण इसे रामेश्वर के नाम से जाना जाता है। अर्थात् जो श्रीराम के भी ईश्वर हैं और जिसकी पूजा स्वयं श्रीरामचंद्र ने भी की थी। इससे स्पष्ट है कि देवों के भी देव महादेव शिव हैं।

9. केदारनाथ

उत्तराखंड में हिमालय की केदार चोटी पर केदारनाथ मंदिर स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग का वर्णन शिव पुराण में भी मिलता है। सर्व के उद्धारकर्ता, भाग्य विधाता, सुखकर्ता होने के कारण ही उन्हें लोग नाथ अर्थात् स्वामी के नाम से भी पुकारते हैं। परमात्मा ही मुक्ति एवं जीवनमुक्ति की राह बताते हैं और इस धरा पर अवतरित होकर मनुष्य को राजयोग की शिक्षा देकर नर से नारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनने की शिक्षा देते हैं।

10. भीमाशंकर

महाराष्ट्र के सह्याद्रि पर्वत पर भीमा नदी के किनारे मंदिर स्थित है। इस मंदिर में मूर्ति से निरंतर जल झरता रहता है। इसे मोटेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। जो मनुष्यात्मा परमात्मा के बताए मार्ग पर चलती और सच्चे मन से उन्हें याद करती है तो बदले में परमात्मा उसे 21 जन्मों की प्रालब्ध देते हैं। अतः परमपिता शिव परमात्मा ही सबके भाग्यविधाता और कल्याणकर्ता हैं।

11. ओंकारेश्वर

मध्य प्रदेश के ओंकारेश्वर में नर्मदा नदी के तट पर मंदिर स्थित है। जिस स्थान पर यह मंदिर है, उस पहाड़ी के चारों ओर नदी बहने के कारण यहां ॐ आकार बनता है। इस कारण से इसका नाम ओंकारेश्वर पड़ा। इसी तरह हमारे वेदों-शास्त्रों में जो भी मंत्र लिखे हुए हैं, वह सभी ॐ से ही प्रारंभ होते हैं। इससे स्पष्ट है कि ॐ अर्थात् परमपिता परमात्मा ही इस सृष्टि के रचयिता त्रिमूर्ति हैं। वही सृजनहार और पालनहार हैं।

12. घृष्णेश्वर

महाराष्ट्र के संभाजी महाराज नगर के पास यह मंदिर स्थित है। शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है। पूरे भारत में शिव परमात्मा की यादगार के रूप में मंदिर बने हुए हैं। जो शिव को सर्वमान्य, सर्वोच्च बनाते हैं। परमात्मा ही सभी का जीवन कल्याणीकारी, मंगलकारी बनाते हैं। उनकी महिमा अपरंपार है।

बेगुसराय (बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर विश्व शांति दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कंचन दीदी ने अतिथि रिफाइनरी के ईडी सत्य प्रकाश, पूर्व मेयर आलोक अग्रवाल, आर्यभट्ट के अशोक कुमार अमर, कृष्णा सिंह भूतपूर्व विधायक भाजपा, डॉ. अखिलेश आयुर्वेदिक कॉलेज, राजू भाई, एनटीपीसी बीबी एन मेहता, राजू ज्वेलर्स का सम्मान कर बाबा के जीवन की शिक्षाओं को बताया।

छतरपुर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के किशोर सागर सेवाकेंद्र पर उमंग उत्साह से गणतंत्र दिवस मनाया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा दीदी ने झंडावंदन कर सभी को देशभक्ति के नारों के साथ छतरपुर को नशा मुक्त बनाने की प्रतिज्ञा कराई। कार्यक्रम में सामाजिक न्याय विभाग से एआई खान, मुख्य लिपिक आरके सोनी, कलाकार अजय खरे, कैलाश खरे, सियाराम नागर उपस्थित रहे।

हाथरस(उ. प्र.)। हाथरस में नगर के प्रमुख समाजसेवियों की ओर से श्रीरामकथा का भव्य आयोजन किया गया। इसमें कथावाचक जगतगुरु रामभद्राचार्य महाराज को ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र 'तपस्याधाम' से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी भावना दीदी ने महाराज जी को पट्टा पहनाकर व स्मृति चिंह प्रदान कर सम्मान किया। इस मौके पर अन्य बीके भाई-बहन भी मौजूद रहे।

छतरपुर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज के किशोर सागर सेवाकेंद्र द्वारा ग्राम बरकोंहा में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत समृद्ध किसान, देश की शान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसें बीके कल्पना दीदी ने कहा कि ऋषि संस्कृति से हमारी कृषि संस्कृति जुड़ी हुई है। बीके मोहिनी ने सभी को नशा मुक्ति का संदेश दिया। बीके पंकज, बीके अल्लू, रामपाल भाई, राम, ज्ञानू और पवन भाई ने नृत्य नाटिका पेश की।

भिलाई (छग)। गणतंत्र दिवस पर आयोजित परेड में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र द्वारा सजाई गई स्वर्णिम भारत की झांकी को प्रथम स्थान मिला। भिलाई इस्पात संयंत्र के एमडी अनिर्बन दास गुप्ता ने ब्रह्माकुमारी आशा दीदी को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया। इस अलौकिक दिव्य झांकी में नई दुनिया, आने वाली दुनिया सतयुग को दर्शाया गया था। जिसकी जिला प्रशासन से लेकर सभी अधिकारियों ने सराहना की।

खजुराहो (मप्र) राष्ट्रीय बालिका दिवस पर राजा बलवंत सिंह कॉलेज एवं सरस्वती शिशु मंदिर हाई सेकेंडरी विद्यालय में बालिकाओं के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके दीक्षा बहन ने जीवन में सफलता पाने के मंत्र बताए। बीके नीरजा बहन ने बताया कि हम स्वतंत्र तो रहें परंतु मर्यादाओं में बंध कर चलें। स्वतंत्रता का अर्थ मर्यादाओं को तोड़ना नहीं बल्कि अच्छे कार्य करने के लिए नई सोच के साथ हम आगे बढ़ें।

सिमराही बाजार (बिहार)। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की बीके बबीता बहन, बीके वीना बहन ने स्मृति चिंह प्रदान कर उन्हें मुख्यालय माउंट आबू पधारने का निमंत्रण दिया। साथ ही क्षेत्र में संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं, नशामुक्त भारत अभियान के बारे में बताया। इस पर उप मुख्यमंत्री चौधरी ने प्रसन्नता जाहिर की। इस मौके पर किशोर भाई भी मौजूद रहे।

हांसी (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज के शांति सरोवर सेवाकेंद्र पर व्यसन मुक्त भारत अभियान का लांचिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि एडीजी श्रीकांत जाधव, एसडीएम मोहित महाराणा, एसपी मक़सूद अहमद, ब्रह्माकुमारीज रूस की डायरेक्टर बीके चक्रधारी दीदी , सोनीपत रिट्रीट सेंटर के डायरेक्टर बीके लक्ष्मी दीदी, नगर परिषद् अध्यक्ष प्रवीण ऐलावादी ने नशामुक्ति रथ यात्रा को भी रवाना किया।

येवला (महाराष्ट्र)। 51 वीं येवला तालुका स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में 'विज्ञान और मौन विषय पर सेवाकेंद्र संचालिका बीके नीता दीदी ने संबोधित किया। साथ ही बच्चों को जीवन में मेडिटेशन और अध्यात्म का महत्व बताया। ब्र.कु.अनु दीदी ने भी बच्चों को गाइड किया। इस मौके पर एमएसजीएस एजुकेशनल कॉम्प्लेक्स के संस्थापक मकरंद भाऊ सोनवणे, अध्यक्ष अरुण भांडगे और 150 स्कूलों के विद्यार्थी मौजूद रहे।

सरिया (छग) ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर राम दरबार की चैतन्य झाँकी सजाई गई। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुनयना बहन ने रामराज्य के बारे में बताया। इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल स्वर्णकार, बीके भुवनेश्वरी बहन ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के पश्चात सभी को ईश्वरीय प्रसाद दिया गया।

थाने शिवाजी नगर (मुंबई)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र द्वारा एसटी डिपो थाने में सड़क सुरक्षा अभियान के अंतर्गत ड्राइवर्स, कंडक्टर्स, वर्कशॉप में कार्यरत वर्कर्स, अधिकारीगण के लिए वर्कशॉप का आयोजन किया गया। डॉ. बीके सरला बहन ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताया। इस मौके पर विभागीय अधिकारी आरएच बांदल मौजूद रहे।

भिलाई (छग)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर भारत दैवीय भूमि की महिमा विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। रूस से आई ब्रह्माकुमारी संतोष दीदी ने कहा कि भारत आदि सनातन धर्म विश्व का मानचित्र था, वहीं ईश्वर का कुटुंब था भारत ही विश्व था। जोन निदेशिका हेमलता दीदी और भिलाई की निदेशिका आशा दीदी ने भी विचार रखे।

राजगीर (नालंदा, बिहार)। वीरायतन की संस्थापक, प्रतिष्ठित आचार्य पद से सम्मानित पद्मश्री साध्वी चंदना जी के 88वें जन्मदिन पर सेवाकेंद्र संचालिका बी.के. ज्योति बहन ने शुभकामनाएं दीं और सम्मान किया।

कामठी (महाराष्ट्र)। ब्रह्माकुमारीज के रनाला में गणतंत्र पर झंडावंदन कर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके प्रेमलता दीदी ने कहा कि अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति भी दायित्व निभाएं। संयुक्त धर्म संसद महाराष्ट्र के प्रदेश संयोजक राजेश शर्मा,महादेव घाट योगासन ध्यान केन्द्र के अध्यक्ष, सचिव महेन्द्र वाही भी मौजूद रहे।

आगरा (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज आर्ट गैलरी म्यूज़ियम सेवाकेंद्र पर गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। इसमें बी.के. मधु बहन, बीके माला बहन, बीके संगीता बहन, बीके सावित्री बहन ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान शहीद प्रमोद सिंह भाई की याद में बने उनके स्मृति स्थल पर भी झंडावंदन किया गया।

सूरजकुंड (हरियाणा)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 37वें अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प सूरजकुंड मेला का उद्घाटन किया। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय और मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर भी मौजूद रहे। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से बीके हरीश दीदी, बीके ऊषा दीदी, बीके प्रीति दीदी, बीके रंजना ने राष्ट्रपति का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। साथ ही क्षेत्र में संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी।

भोपाल (मप्र)। गणतंत्र दिवस पर राज्यपाल मंगू भाई पटेल से ब्रह्माकुमारीज़ की भोपाल जोन की निदेशिका ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी, बीके जया बहन, बीके सरिता बहन और बीके दीपेंद्र भाई ने मुलाकात कर बधाई दी। साथ ही मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण देते हुए मप्र में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं, नशामुक्त भारत अभियान के बारे में जानकारी दी।

राजकोट (गुजरात)। मोरबी के पास टंकारा में समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जन्म जयंती पर आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भाग लिया। इस दौरान राजकोट और मोरबी से बीके अंजू, बीके रेखा, बीके निमिषा, बीके जूली ने राष्ट्रपति से मुलाकात की। इस दौरान राज्यपाल देवव्रत आचार्य, मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल सहित अन्य अतिथियों ने ब्रह्माकुमारी बहनों का स्वागत किया।

नर्मदापुरम (मप्र)। ब्रह्माकुमारी मुख्यालय से आए ब्रह्माकुमार भगवान भाई ने श्रीमद भागवत कथा में भागवत कथा में कहा कि सर्वआत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव का है। परमात्मा शिव का स्मृति चिंह शिवलिंग के रूप में सर्वत्र सर्वधर्मावलंबियों द्वारा मान्य है। ज्योतिर्बिंदु परमात्मा का ही यादगार है। सेवाकेंद्र संचालिका बीके सुनीता दीदी, बीके तुलसा बहन ने भी संबोधित किया। कथावाचक आशीष दुबे का सम्मान किया।

कादमा (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर मेरा गांव नशा मुक्त गांव अभियान का पुलिस अधीक्षक नीतिका गहलोत, सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी वसुधा दीदी ने झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। 29 जनवरी से 5 फरवरी तक चलाए गए अभियान से बाढडा व झोझूकलां खंड के विभिन्न स्कूलों, कालेज व गांवों में युवाओं को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया गया। नशामुक्ति का संकल्प कराया।

आगरा (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के आर्ट गैलरी म्यूज़ियम सेवाकेंद्र की बहनों को आरसीएम ग्रुप द्वारा बहनों को आमंत्रित किया गया। कंपनी महिलाएं सशक्तिकरण पर जोर देती है, और उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है। इसमें भोपाल से आए डॉक्टर बीके रमेश तेवानी ने प्राकृतिक आहार का जीवन में महत्व बताया। इस दौरान बीके मधु बहन, बीके माला बहन और बीके संगीता बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

रुड़की (उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ के दक्षिण सिविल लाइंस सेवाकेंद्र पर आध्यात्मिक सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके शारदा दीदी, सबजोन इंचार्ज बीके मंजू दीदी, हरिद्वार सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके मीना दीदी, बीके रजनी बहन, बीके सुशील, डॉ. चंद्रशेखर शास्त्री, मुरली मनोहर, साहित्यकार श्रीगोपाल नारसन ने विचार व्यक्त किए।

सोनीपत (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ रिट्रीट सेंटर में आध्यात्मिकता और विज्ञान के समन्वय पर स्पार्क विंग और ऋषिहुड यूनिवर्सिटी द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विशेष रूप से स्पार्क विंग की चेयरपर्सन बीके अम्बिका बहन, नेशनल संयोजक श्रीकांत भाई, दिल्ली की संयोजिका बीके सरोज बहन, रिट्रीट सेंटर की डायरेक्टर बीके लक्ष्मी बहन , डीआरडीओ में एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. सुशील चंद्रा मौजूद रहे।

बिजावर/छतरपुर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला भारगुवां में महाशिवरात्रि महोत्सव के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके प्रीति बहन और बीके रचना बहन ने सभी को महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्व बताया। साथ ही सभी को जीवन से अवगुण छोड़ने और सद्गुण अपनाने का संकल्प कराया। इस मौके पर सरपंच राकेश कुमार राय, पोस्टमैन छोटेलाल गुप्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ममता प्रजापति व ग्रामीण मौजूद रहे।

सौराष्ट्र/राजकोट (गुजरात)। मुंबई से सबजोन निदेशिका डॉ. बीके नलिनी दीदी और नेशनल मीडिया को-ऑर्डिनेटर राजयोगी बीके निकुंज के पधारने पर शहर में कई मीडिया संस्थान,स्कूल, कॉलेज, सामाजिक संगठन में कार्यक्रम आयोजित किए गए। अटल बिहारी वाजपेयी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को मोटिवेट किया।

जटवाड़ा जदीद, फर्रूखाबाद (उप्र)। कला एवं साहित्य की अखिल भारतीय संस्था संस्कार भारती द्वारा एक भारत- श्रेष्ठ भारत यात्रा के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इसमें बीके ज्योति बहन, बीके पूनम बहन, बीके सुधा बहन, बीके संतोष बहन, बीके गीता बहन, बीके सतेंद्र भाई का सम्मान किया गया।

हरपालपुर (मप्र)। अंतर्राष्ट्रीय कैंसर दिवस पर लाइफ हेल्थ केयर हॉस्पिटल में ब्रह्माकुमारीज और हॉस्पिटल के सहयोग से शिविर आयोजित किया गया। डॉ. योगेंद्र कुमार दीक्षित ने व्यसन से मुक्त रहने के लिए परामर्श दिया। सेंटर प्रभारी बीके आशा दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए राजयोगी की गहन अनुभूति कराई।

बिलासपुर (छग)। शिव अनुराग भवन सेवाकेंद्र पर रूस से पधारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी संतोष दीदी के आगमन पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने कहा कि ईश्वरीय ज्ञान से ही विश्व में रामराज्य स्थापित हो सकता है। संचालिका बीके मंजू दीदी ने आभार व्यक्त किया।

गंज बासौदा (मप्र)। सेवाकेंद्र पर सकारात्मक युवा विकसित भारत का आधार विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके रेखा दीदी, बीके रुक्मणि दीदी, बीके अनु दीदी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में विशेष रूप से विद्यार्थी परिषद अध्यक्ष देवर्ष गुप्ता, अशोक अग्रवाल सहित अन्य युवा मौजूद रहे।

इंदौर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रेमनगर सेवाकेन्द्र अनुभूति भवन में शहीद दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इंडिया एज्युकेशन एक्स मैन वेलफेयर एज्युकेशन के अध्यक्ष एवं सैनिक प्रकोष्ठ सहसंचालक रिटायर्ड कमांडर अजय कुमार जैन, रिटायर्ड फ्लाइंग इंजीनियर डॉ. एसएल शर्मा, संचालिका बीके शशी दीदी ने विचार व्यक्त किए।

रियल लाइफ

ज्ञान मुरली सुनते समय होता था दिव्य अनुभव

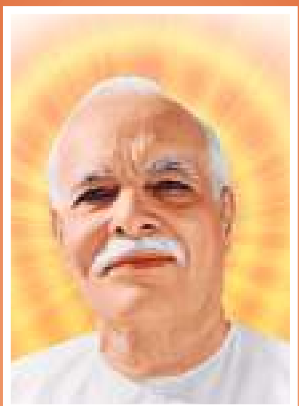

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

जिज्ञासुओं के मन में जो संकल्प उठते हैं, उनका समाधान अगले दिन मुरली में मिल जाता था।

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

प्रातः ज्ञान-मुरली सुनते समय भी जिज्ञासुओं को एक विचित्र प्रकार का अनुभव होता था। वे देखते थे कि वह मुरली सर्व आत्माओं के प्रति ही चलाई गई है। वह सभी धर्मों, सभी देशों, सभी वर्गों के लोगों के लिए है। उसमें तीनों कालों तथा तीनों लोकों का ज्ञान समाया हुआ है। उसमें सुनाने वाला साधुओं, महात्माओं, जगत गुरुओं, ऋषियों-मुनियों, देश के राष्ट्रपति तथा राजनैतिक नेताओं, राजाओं-महाराजाओं आदि-आदि से भी उच्च अधिकार के स्वर से बोलता है और ऐसे बोलता है जैसे परमधाम से आया हो, स्वयं 'काम' आदि विकारों से बिल्कुल ही निर्मल, सर्वशक्तिवान तथा ज्ञान का सागर हो। उसके ज्ञान का आधार न कोई शास्त्र है, न कोई प्रचलित विचारधारा। उस ज्ञान की सीमा न एक जाति या काल विशेष है, न 'धर्म-विशेष'। वह बोलता भी ऐसे है जैसे कि उसने हमारा कल्याण करके ही छोड़ना हो, हमें पवित्र बनाने का कर्तव्य करके ही रहना हो। वह हमें 'बच्चे-बच्चे.....'भी ऐसे स्वाभाविक तरीके से तथा स्नेह से कहता है जैसे हम सचमुच उसके 'बच्चे' हो और वह हमारा 'बाप' हो।

हम उसे जानें-न-जानें, मानें-न-मानें परन्तु उसका व्यवहार ऐसा है जैसेकि वह हमें जानता और पहचानता है और पक्की तरह हमें अपना मानता है! वह हमें पुचकारता और दुलारता भी ऐसे है जैसेकि उसका प्यार हिलोरें लेता हो और उसका स्वाभाविक गुण ही प्यार करना तथा सभी का कल्याण करना और सभी को पतित से पावन बनाना हो। हम उससे रूठ जाएँ तो भी वह हमें मनाता हैः हम सो जाएँ तो वह जागती-ज्योति हमें जगाता है, हम कर्तव्य-विमुख हो जायें तो वह हमें जतलाता तथा सुझाता है; कदम-कदम पर वह हमारे जीवन की ज़िम्मेवारी लेता है।

वे बाबा के पास बैठकर बाबा को अपने किये विकर्मों का चिट्ठा बताते तो भी बाबा की दृष्टि उनके लिए 'घृणा की दृष्टि न बनती बल्कि उनके उन संस्कारों से निकालने का ही वे सदा पुरुषार्थ कराते। उनका प्यार पहले की तरह बना रहता। बाबा अभी-अभी मुरली में बहुत ही ओजस्वी भाषा में संन्यासियो, शास्त्रवादियों, राजनीतिज्ञों या सामान्य व्यक्तियों को किसी महान भूल के लिये फटाकरता है; लगता है कि उसमें शायद आवेश है परन्तु वास्तव में उसमें आवेश है ही नहीं क्योंकि एक ही क्षण में विषय को पलटकर मधुर मुस्कान से वह दूसरी बात कहने लगता है और उन संन्यासी आदि को भी अपने बच्चे मानते हुए उनके जीवन के एक पहलू (पवित्रता) के लिए उनकी सराहना भी करता है। उसकी बात से पता चलता है कि वह निर्वैर है, निर्भय है, अकाल मूर्त और अव्यक्त मूर्त है। वह जिसके तन में अर्थात् ब्रह्मा बाबा के तन में आया है, उसे स्वयं से अलग बताता है। उसके हाव-भाव, उसकी वाणी, उसका ओज़, उसका प्यार ही न्यारा है।

जिज्ञासु सोचते थे कि 'बाबा से हम अमुक बात पूछेंगे अथवा हमारे मन में अमुक-अमुक जो संकल्प उठते हैं, उनका समाधान हम बाबा से लेंगे।' परन्तु वे उसी दिन या अगले ही दिन देखते कि बाबा ने जो मुरली चलाई है, उसमें उन्हीं प्रश्नों पर प्रकाश डाला है, मानो कि वह मन को जानता हो। वे अपने मन में सोचते कि यदि हमारा योग सच्चा है तो शिव बाबा हमें विशेष प्यार करेंगे और हमें दुलारेंगे और वे देखते कि उनके मन की बात का उत्तर उन्हें बाबा के व्यवहार से मिलता। ब्रह्मा बाबा कहते -'मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ परन्तु बच्चे जो संकल्प करते हैं, वे शिव बाबा के पास पहुँचते हैं और वे मेरे तन में आकर, यदि उचित समझते हैं, तो मुरली में उस विषय पर समझा जाते हैं।' इस प्रकार, एक निःस्वार्थ और अलौकिक प्यार, एक दिव्य प्रभाव, एक विचित्र आकर्षण तथा वातावरण में शान्ति, पवित्रता और आनन्द की लहरों को अनुभव करके और मुरली में विशेषताओं की ओर ध्यान देकर बहुत-से जिज्ञासुओं को प्रैक्टिकल रीति से यह निश्चय हो जाता कि शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा के तन में आकर हमें पढ़ाते हैं। **क्रमशः...**

होली पर विशेष...

पवित्रता का रंग खुशियों के संग

स्थान, वस्तु, व्यक्ति और विचार किसी भी रूप में हो पवित्रता सभी को भाती है। क्योंकि आत्मा का मूल संस्कार, दिव्यगुण युक्त और प्रकृति पवित्र स्वरूप है। सृष्टि के आरंभ में इसका स्वरूप स्वाभाविक रूप से पवित्र था। हर चीज सौ फीसदी खरी और शुद्ध। आज सृष्टि में चारों ओर अपवित्रता, आसुरीयता और अति की पराकाष्ठा से हर चीज गुजर रही है। आत्मा जो स्वर्णिम काल में सौ फीसदी खरी, सत्वगुण से युक्त और सतोप्रधान थी, उसे आज अपवित्रता के आवरण ने इस तरह ढक लिया है कि अपना मूल संस्कार, पवित्र स्वरूप स्मृति पटल से विस्मृत हो गया है। ऐसे में समय में आत्मा को फिर से पवित्रता के रंग में रंगने, पवित्रता के सागर परमात्मा परमधाम से पधारकर पवित्रता की गंगा में डुबकी लगवा रहे हैं। परमात्मा ने गीता में स्पष्ट कहा है कि जब-जब इस धरा पर अपवित्रता की आंधी अपने चरम पर होती है, तब-तब मैं फिर से पवित्र दुनिया की स्थापना करने, आत्मा को पवित्रता की राह दिखाने अवतरित होता हूं। दुनिया को अब तक किसी चीज ने बांधे रखा है तो वह है पवित्रता का बल।

पवित्रता दुनिया का सबसे बड़ा बल

वर्तमान में यह वही समय चल रहा कि जब हमें इस यथार्थ सत्य को अंतस से स्वीकार कर खुद के पवित्र स्वरूप में टिकने की जरूरत है। क्योंकि पवित्रता ही दुनिया की वह शक्ति है जिसके बल से इस अपवित्र दुनिया को फिर से पवित्र, पावन, सतयुगी दुनिया बनाया जा सकता है। दुनिया में यदि ऋषि-मुनि, संत-महात्माओं को गायन- सम्मान योग्य और उनके आचरण को धारण करने योग्य समझा जाता है तो उसके पीछे मूल भाव उनके जीवन का पवित्रमय होना है। पवित्रता दुनिया सबसे बड़ा बल, पूंजी और शक्ति है।

राजयोग की शिक्षा ही एकमात्र उपाय

मनुष्य आत्माओं को फिर से पवित्रता के रंग में रंगने परमात्मा का यही संदेश है कि हे! आत्माओं मुझसे योग लगाओ तो मैं तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए पवित्र दुनिया का मालिक बना दूंगा। सृष्टि परिवर्तन के इस संधि काल में भी यदि हमने इस यथार्थ सत्य को नहीं स्वीकारा, परमात्मा की इस शिक्षा को शिरोधार्य नहीं किया तो फिर पूरे कल्प के लिए उस परम पवित्र दुनिया के साक्षी बनने से वंचित रह जाएंगे। क्योंकि पूरे कल्प में एक ही बार परमसत्ता, सर्वोच्च सत्ता का अवतरण होता है। परमात्मा के इस आह्वान, सत्य ज्ञान को आज लाखों लोगों ने दिल से स्वीकारा है, उनकी श्रीमत को शिरोधार्य कर जीवन को पवित्रमय बनाकर संयम पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। राजयोग की शिक्षा ही आत्मा के पवित्र स्वरूप को फिर से जागृत करने, आत्मा पर लगी विषय-विकारों की जंक को साफ करने और फिर से पावन बनाने का एकमात्र रास्ता और उपाय है।

खुशियों के संग...

जब जीवन में स्थायित्व आ जाता है। सत्य ज्ञान से हमारा परिचय हो जाता है तो फिर आत्मा और मन खुशी से भर जाता है। क्योंकि जिसने भी परमात्मा की दिव्य अनुभूति कर ली उसे फिर कुछ पाने के लिए शेष नहीं रह जाता है। परमात्मा कहते हैं मेरे बच्चों जीवन में सबकुछ चला जाए लेकिन खुशी न जाए। खुशी आत्मा का गहना, श्रृंगार और शोभा है। आपका खुशनुमा जीवन अनेकों के लिए प्रेरणा दिलाता है। उन्हें प्रभु से जोडऩे के लिए लालायित और उत्साहित करता है। खुशी संतुष्टता की निशानी है और प्रभु से मिला वरदान है। जीवन का आधार और कर्म-धर्म का सार खुशी ही है। खुशी की गोली खाओ, जीवन को आनंदमय बनाओ।

मैं आत्मा, परमात्मा की होली....

होली अर्थात् पवित्र। होली का त्योहार अपने आप में कई महान आध्यात्मिक रहस्यों को समेटे हुए है। जो हमें संदेश देता है कि दुनिया में सबसे प्यारा, गहरा और स्थायी रंग है तो वह है परमात्म प्रेम का रंग। इस रंग में जो आत्मा एक बार रंग कर सराबोर हो जाती है तो उसका जीवन रंगमय, खुशनुमा बन जाता है। खुशी, उमंग-उत्साह, उल्लास का प्रतीक होते हैं। इस होली पर एक संकल्प हमारा हो कि आपस में बैर, बुराई, गले-शिकवे भुलाकर, मन के मैल को खुशी के रंग से धो डालते हैं। यह रंग पर्व आपके जीवन में नई उमंग, नव उत्साह और नव साहस लेकर आए और जीवन को खुश रंग बनाए। इस बार होलिका दहन के साथ जीवन में कांटों के समान चुभने वाली बातें, गलत आदतें और संस्कारों को स्वाहा कर उन्हें सदा के लिए तिलांजली दे दें। क्योंकि आपके जीवन को नव प्रकाश से भरने उसे खुशियों के रंग में रंगने परमात्मा नवदुनिया की सौगात लेकर आए हैं और यही संदेश दे रहे हैं अब घर चलना है....

राजयोगिनी दादी जानकी : चतुर्थ पुण्य स्मरण

दादी के जीवन के तीन मंत्र- सच्चाई, सफाई और सादगी

महाप्रयाण
27 मार्च 2020

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

विश्वभर को सच्चाई, सफाई और सादगी का संदेश देने वालीं योग शक्ति राजयोगिनी दादी जानकी जी की तपस्या का ही कमाल है कि उनके योग के प्रकम्पन्नों को आज भी महसूस किया जाता है। दादी की याद में बने शक्ति स्तंभ पर पहुंचते ही मन योग में रम जाता है। दादी की कथनी और करनी एक समान थी। यही कारण है कि उन्होंने ताउम्र अपने जीवन के मूलमंत्र- सच्चाई, सफाई और सादगी को प्रत्येक पल जीया। हृदय इतना विशाल ब्रह्माकुमारीज़ की मुखिया होने के बाद भी कहती थीं कि मेरा जेब खाली और मैं विश्व का मालिक। दादीजी 27 मार्च 2020 को 104 वर्ष की उम्र में स्थूल देह का त्याग कर अव्यक्त वतन वासी हो गईं थीं।

बचपन से ही थे भक्तिभाव के संस्कार, चौथी तक पढ़ीं

अविभाज्य भारत के हैदराबाद सिंध प्रांत में वर्ष 1916 में जन्मी दादी जानकी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। भक्ति भाव के संस्कार बचपन से ही मां-बाप से विरासत में मिले। उन्होंने लोगों को दुःख, दर्द, तकलीफ, जातिवाद और धर्म के बंधन में बंधे देख अल्पायु में ही समाज परिवर्तन का दृढ़ संकल्प किया। माता-पिता की सहमति से 21 वर्ष की आयु में आप ओम् मंडली (ब्रह्माकुमारी•ा का पहले यही नाम था) से जुड़ गईं। ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में 14 वर्ष तक गुप्त तपस्या की।

37 देशों में किया आध्यात्म राजयोग का शंखनाद

दादी पहली बार 60 साल की आयु में वर्ष 1970 में विदेशी जमीं पर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता का बीज रोपने के लिए निकलीं। सबसे पहले लंदन से आध्यात्म का बीजारोपण किया। यहां 1991 में कई एकड़ क्षेत्र में फैले ग्लोबल को-ऑपरेशन हाऊस की स्थापना की। कारवां बढ़ता गया और यूरोप के देशों में आध्यात्म का शंखनाद हुआ। दादी ने अकेले ही 100 से अधिक देशों में आध्यात्म का संदेश पहुंचाया। उन्होंने वर्ष 1970 से 2007 तक 37 वर्ष विदेश में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2007 में संस्था की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के अव्यक्त होने के बाद 27 अगस्त 2007 को ब्रह्माकुमारी•ा की मुख्य प्रशासिका बनकर अंतिम सांस तक ईश्वरीय सेवा की।

विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला था

दादी जानकी दुनिया की पहली ऐसी महिला थीं, जिन्हें सबसे स्थिर मन की महिला का खिताब मिला था। अमेरिका के टेक्सास मेडिकल एवं साइंस इंस्टीट्यूट में वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण के बाद दादीजी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड वुमन से नवाजा था। उन्होंने योग से अपने को मन इतना संयमित, पवित्र, शुद्ध और सकारात्मक बना लिया था कि वह जिस समय चाहें, जिस विचार या संकल्प पर और जितनी देर चाहें, स्थिर रह सकती थीं।

दादीजी के जीवन की शिक्षाएं

- प्रभु से इतना प्यार है कि उसे अपने दिल में बैठा रखा है। उसे हरदम अपने दिल-जिगर के पास महसूस करती हूं। जब आंख खोलती हूं तो बाबा की दृष्टि पड़ती, उन्हें अपनी आंखों से निहारती हूं। परमात्मा से अन्नय प्रेम ही जीवन का सार है।
- मेरे दो बच्चे हैं- सुख और शांति। मेरा पति दिलवाला (परमपिता शिव परमात्मा) है। अब मेरा तीसरा बच्चा है प्रेम। जीवन का आधार सुख-शांति और प्रेम है।
- मेरा सफेद कपड़ा, जेब खाली और सारे विश्व की मालिक हूं। मैंने कभी जीवन में अपने साथ पर्स नहीं रखा। कभी भी एक रुपए की फिक्र नहीं रही। करनकरावनहार परमात्मा शिव बाबा सब करा लेता है। जब सबकुछ उसे अर्पण कर देते हैं तो फिर सारी जि मेवारी प्रभु पिता की हो जाती है।
- जीवन में सच्चाई है तो खुशी मिलेगी, खुशी से प्रेम और प्रेम से नम्रता-मधुरता।
- जीवन में सदा ओके रहना, चाहे लाख परेशानियां आएं, अपने मन की स्थिति कभी बिगड़ने नहीं देना।
- सारे संसार में कोई बात मुश्किल नहीं है। परमात्मा पिता पर विश्वास हो तो सब आसान है। ब्रह्माकुमारी बहनें जो संकल्प करती हैं वह पूरा हो जाता है क्योंकि सब कार्य परमात्मा शिव बाबा कराते हैं।

प्रधानमंत्री ने बनाया था स्वच्छता का ब्रांड एंबेसेडर

देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर भी नियुक्त किया था। दादी के नेतृत्व में पूरे भारतवर्ष में विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाए गए। इसके अलावा दादी को देश-विदेश में मानव मात्र की सेवाओं के लिए कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अवार्ड से भी नवाजा गया। मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता में विश्वभर में सराहनीय योगदान देने पर दादीजी को वर्ष 2012 में गीतम विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। आध्यात्मिक एवं धार्मिक लोगों के एक संगठन कीपर्स ऑफ विजडम की दादी जी सदस्य भी थीं। विश्व स्तर पर मानव आवास एवं पर्यावरण की समस्याओं के समाधान के लिए यह संगठन कार्य करता है। दादी के समान में वर्ष 1977 में लंदन में जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थकेयर की स्थापना की गई।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी : तृतीय पुण्य स्मरण

दादी कहतीं थीं- सदा खुश रहो, खुशी बांटो, कुछ हो खुशी न जाए

महाप्रयाण
11 मार्च 2021

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

जिनकी आंखों में परमात्म प्यार की चमक, चेहरे पर दिव्य मुस्कान, रुहानियत से लबरेज व्यक्तित्व, सादगी की मूरत और दिव्य गुणों रूपी गुलदस्ते की तरह जिनका जीवन गुलजार था। ऐसी दिव्य आभा और दिव्य दृष्टि के वरदान से संपन्न थीं राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी)। 11 मार्च 2021 को इस दैहिक लोक से महाप्रयाण कर अव्यक्तवासी हो गईं थीं। 92 वर्ष की आयु में आपको वर्ष 2020 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। दादीजी की स्मृति और उनकी शिक्षाओं को याद दिलाने और उन्हें संजोकर रखने के लिए शांतिवन परिसर में स्मृति स्तंभ अव्यक्त लोक का निर्माण कार्य जारी है। गुलजार दादी के प्रथम पुण्य स्मरण पर उनके जीवन से जुड़े अनछुए पहलू , प्रेरणाएं और शिक्षाओं को लेकर विशेष....

दादी को बचपन में ध्यान में होती थीं दिव्य अनुभूतियां

दादी हृदयमोहिनी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि होने से आप जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहां तक कि आपको कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार हुए, जिनका जिक्र उन्होंने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया। दादी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। बचपन में जहां अन्य बच्चे स्कूल में शरारतें करते और खेल-कूद में दिलचस्पी के साथ भाग लेते थे, वहीं आप गहन चिंतन की मुद्रा में रहतीं थीं।

1969 से 2016 तक परमात्म मिलन

18 जनवरी 1969 में संस्थापक ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी ने परमात्म संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक परमात्मा का दिव्य संदेश देकर लाखों भाई-बहनों को योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया था कि जब मैं मन की शक्ति से वतन में जाती हूं तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता है। दादी का इलाज करने वाले डॉक्टर कहते थे कि जैसे ही दादीजी के रूम में जाते थे तो मन को शक्तिशाली फीलिंग होती थी। बीमारी के बाद भी दादीजी के चेहरे पर कभी दर्द, दुःख या उदासी की फीलिंग नहीं देखी। दादीजी के साथ के अनुभव को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। उन दिव्य अनुभूतियों को सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है।

8 साल की उम्र में संस्था से जुड़ी

दादी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में करांची में हुआ था। आप जब 8 वर्ष की थी तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहां आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और म मा (संस्थान की प्रथम मु य प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार से प्रभावित होकर अपना जीवन उनके समान बनाने की निश्चय किया। आपकी लौकिक मां भक्ति भाव से परिपूर्ण थीं।

दादीजी के जीवन की शिक्षाएं

- जो भगवान से संबंध जोड़ते हैं वह भाग्यवान बन जाते हैं। परमात्मा का साथ जीवन की ज्योति जगा देता है, जिससे दु:खों का अंधकार समाप्त हो जाता है। भगवान का बच्चा होने का अर्थ है, उनकी विशेषताओं को स्वयं में प्रत्यक्ष करना।
- जब आपको गर्मी होती है तो पंखे से हवा मांगते नहीं हैं, आप उसके सामने बैठ जाते हैं और हवा अपने आप आपको मिल जाती है, उसी प्रकार परमात्मा के सामने बैठ उसे हम दिल से याद करें तो परमात्मा की सारी शक्तियां आपको स्वत: मिल जाएंगी, आपको मांगने की जरुरत नहीं।
- समर्थन और विरोध केवल विचारों का होना चाहिए, किसी व्यक्ति का नहीं। क्योंकि अच्छा व्यक्ति भी गलत विचार रख सकता है और किसी बुरे व्यक्ति का भी विचार सही हो सकता है।
- किसी चीज को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, किन्तु उसे महसूस करने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती हैं। प्रसन्न व्यक्ति वह है जो स्वयं का मूल्यांकन करता है, जो दूसरों का मूल्यांकन करता है वह दु:खी रहता है।
- चित्र बनाना जितना आसान है चरित्र बनाना उतना ही मुश्किल। जब कोई गुण दिखाई दे तो अपने मन को कैमरा बना लीजिए।

संपर्क में आने वालों को होती थी दिव्यता की महसूसता

जब आप मात्र 9 वर्ष की थीं तब से आपको दिव्य लोक की अनुभूति होने लगी। इसके बाद से वह जीवन की अंतिम यात्रा तक ज्यादातर समय ध्यान मग्न ही रहती थीं। दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता की मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके संपर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था। एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वह 9 वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गईं थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहां बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना याल रखते थे कि खुद अपने हाथ से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक मां-बाप की याद नहीं आई।

विचारों के आधार पर बनती है मन की स्थिति

शिव आमंत्रण, बोरीवली, मुंबई

ब्रह्माकुमारीज के बोरीवली वेस्ट सेवाकेंद्र द्वारा अलविदा तनाव- स्ट्रेस फ्री लाइफ विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें राघविंदर भाई ने मधुर गीत प्रस्तुत किए। सेन्टर प्रभारी बीके बिंदू दीदी ने कहा कि आज सबकुछ करते हुए अपने मन का ध्यान रखना बेहद जरूरी है।

मुख्य वक्ता बीके श्रेया ने कहा कि हमारे मन की स्थिति, बाहरी परिस्थितियों पर न आधारित होते हुए, अपने ही विचारों से बनती है। हम जो देखते, सुनते वा पढ़ते हैं, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बनता जाता है। जहां अभिभावकों की अपने बच्चों से अच्छे रिजल्ट की अति महत्वाकांक्षा के कारण, बच्चों में तनाव बढ़ता जा रहा है। इसलिए कई बार वे, अपने मूल्यों को पीछे छोड़, चीटिंग जैसे गलत रास्ते अपनाते हैं। वहीं बड़े जीवन की समस्याओं में निगेटिव सोचने के कारण, तनावग्रस्त रहने लगे हैं। हमारी सोच से ही हमारे इमोशंस बनते हैं और हमेशा सही सोचने की प्रैक्टिस करने से, हम सदा खुश और स्ट्रेस फ्री रह सकते हैं। तनाव हमारे अपने मन की कमजोरी है। इसलिए हमें मेडीटेशन से अपने मन को शक्तिशाली बनाने की प्रैक्टिस करनी चाहिए। मन से हमारे मन को शक्ति मिलती है। मन के व्यर्थ और हीन विचार दूर हो जाते हैं। उमंग-उत्साह से भरपूर हो जाता है। हमारा जीवन की कैसी क्वालिटी है यह हमारे मन के ऊपर निर्भर करता है। इसलिए अपने मन का सदा ध्यान रखें।

उन्होंने कहा कि परिस्थिति को स्वीकार करने, बीती को बिंदी लगाने, हमेशा सही सोच रखने के लिए आए हुए सभी भाई बहनों को, मेडिटेशन कोर्स के लिए आमंत्रित किया। बीके पिंकी बोरट ने संचालन किया।

आबू रोड (राजस्थान)। यूएसए की ग्लोबल एलायंस फॉर वूमन एम्पॉवरमेंट संस्था द्वारा महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. ब्र.कु. सविता बहन और वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका डॉ. ब्र.कु. बिन्नी बहन को वूमन एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड उनके द्वारा महिलाओं के उत्थान व उनके जीवन को सशक्त, बेहतर व खुशहाल बनाने के लिए प्रदान की जा रही महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय सेवाओं के लिए प्रदान किया गया है।

बिलासपुर (छग)। नशामुक्ति अभियान निजात के एक वर्ष पूरा होने पर आयोजित कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री अरुण साव द्वारा टिकरापारा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मंजू दीदी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान नशामुक्त भारत अभियान में उल्लेखनीय सेवा पर प्रदान किया गया है। विधायक सुशांत शुक्ला, बिलासपुर यूनिवर्सिटी के कुलपति एडीएन वाजपेयी भी मौजूद रहे।

बीके राज दीदी व बीके पवन को डॉक्टर्स ऑफ लेटर्स की उपाधि

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन स्थित डायमंड हाल में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आध्यात्मिकता, नेतृत्व एवं सामाजिक कार्य में उल्लेखनीय कार्य करने पर ब्रह्माकुमारीज की नेपाल की जोनल निदेशिका बीके राज दीदी और यूएसए के वरिष्ठ राजयोगी बीके पवन भाई को डॉक्टर्स ऑफ लेटर्स की मानद उपाधि से नवाजा गया। आप दोनों को यह उपाधि आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने और व्यापक स्तर पर आपके द्वारा लोगों के जीवन परिवर्तन को देखते हुए यह उपाधि प्रदान की गई है।

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आज यह सम्मान भाई-बहनों की त्याग, तपस्या, सेवा और साधना का सम्मान है। हजारों बहनों ने परमात्म आज्ञा पर अपने आप को अर्पण कर दिया यह उनके त्याग को दिखाता है। मानवता की सेवा के लिए ऐसा त्याग अपने आप में बड़ी बात है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि संस्थान में हजारों ऐसी बहनें हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता के कल्याण और सेवा में झोंक दिया है। आप सभी के जीवन का एक ही लक्ष्य है विश्व शांति और विश्व परिवर्तन। मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन लोकेंद्र सिंह ने कहा कि आज आप दोनों महान विभूतियों को यह उपाधि प्रदान करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। खुद को भाग्यशाली समझ रहा हूं।

कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि बीके राज दीदी ने मानवता की सेवा में अपना पूरा जीवन लगा दिया। आपके नेतृत्व में पूरे नेपाल में भारतीय पुरातन संस्कृति अध्यात्म एवं राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा जन-जन को दी जा रही है। हजारों लोगों का जीवन आपकी सेवा से बदला है।

जबलपुर (मप्र)। विश्व रेडियो दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा सेमीनार का आयोजन किया गया। शिव वरदान भवन कटंगा कॉलोनी सेवाकेंद्र प्रभारी एवं इंदौर जोन की मीडिया जोनल कोऑर्डिनेटर बीके विमला दीदी ने परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त किए। आकाशवाणी उपनिदेशक (कार्यक्रम) दिनेश नामदेव, कार्यक्रम अधिकारी प्रमोद कार्तिकिय, बीके विकास मुख्य रूप से मौजूद रहे।

जीवन में श्रेष्ठता के लिए संस्कार श्रेष्ठ बनाएं

शिव आमंत्रण, रायपुर (छग)

रूस में ब्रह्माकुमारी संस्थान की निदेशिका ब्रह्माकुमारी सन्तोष दीदी के पधारने पर विशेष योग शिविर आयोजित किया गया। इसमें उन्होंने कहा कि भारत देवभूमि है। यह सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा की अवतरण भूमि है। इसलिए यहां की सनातन संस्कृति सभी के मन को लुभाती है। जीवन में श्रेष्ठता लाने के लिए हमें संस्कारों को परिवर्तन कर उसे श्रेष्ठ बनाना होगा। संस्कार परिवर्तन का आधार हमारा योगबल होता है। योगबल माना एक परमात्मा से प्रीत की लगन में मगन अवस्था। हमारा अविनाशी सम्बन्ध एक परमात्मा से है। बाकी सगे सम्बन्धियों से हमारा नाममात्र तात्कालिक सम्बन्ध है। क्योंकि हर जन्म में हमारे रिश्तेदार बदल जाते हैं। जब तक हमें परमपिता परमात्मा शिवबाबा का परिचय नहीं मिला था तब तक हम जानते भी नहीं थे कि हम कौन हैं? हमें अपनी खुद की पहचान नहीं थी। इसी प्रकार शिवबाबा ने परमधाम से आकर बतलाया कि वापिस घर चलना है। घर जाने के लिए ज्ञानी और योगी बनना है। पवित्र बनना है। परमात्मा ने आकर हमें बतलाया कि तुम आत्मा हो, शरीर नहीं हो। जिस प्रकार जब हमें कहीं जाना होता है तब हम प्लानिंग करते हैं ताकि वहां पहुंचकर कोई कठिनाई न हो। बता दें कि आप विगत 34 वर्ष से रूस में सेवाएं दे रही हैं। विमानतल पर उनका स्वागत रायपुर केन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने किया। जोन निदेशिका बीके हेमलता दीदी और भिलाई इंचार्ज बीके आशा दीदी ने भी संबोधित किया।

देहरादून (उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सेवाकेंद्र सुभाष नगर में 'वर्तमान परिदृश्य में मानव की भूमिका' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अहमदाबाद से पधारी महिला प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी शारदा दीदी, कैबिनेट मंत्री रेखा आर्य, सविता कपूर, महापौर सुनील उनियाल गामा, बीके सुशील और बीके मंजू दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960

Scan To Pay

ओआरसी : व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े लोगों के लिए तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

राजयोग से आंतरिक शक्तियां होती हैं जागृत

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज महिलाओं द्वारा संचालित विश्व में सबसे बड़ी आध्यात्मिक संस्था है। ब्रह्माकुमारी बहनें आत्मिक सशक्तिकरण पर विशेष बल देती हैं। उक्त विचार सीबीआई के पूर्व निदेशक डॉ. डीआर कार्तिकेयन ने व्यक्त किए। वह भोराकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में व्यापारियों एवं उद्यमियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में संबोधित कर रहे थे। व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों को चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए आंतरिक शक्तियों का विकास विषय सम्मेलन आयोजित किया गया।

उन्होंने कहा कि शारीरिक एक्सरसाइज शरीर को ठीक रख सकती है, लेकिन आत्मा को स्वस्थ रखने के लिए मन की एक्सरसाइज जरूरी है। तनाव को कम करने के लिए राजयोग जरूरी है। राजयोग हमें स्वयं की पहचान कराता है। राजयोग हमारी आंतरिक शक्तियों को जागृत करता है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि आंतरिक शक्तियों द्वारा ही हम चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। मन की उलझन घटना को बड़ा बना देती है। जीवन में दूसरों का प्रभाव हमें कमजोर बना देता है। हमारी आंतरिक शक्ति तभी कार्य करती हैं, जब हम उलझनों से मुक्त रहते हैं। आज ज्यादातर लोग ईश्वर की महिमा तो करते हैं लेकिन स्वयं के जीवन में गुणों को धारण नहीं करते। राजयोग से ही हम स्वयं को सशक्त बना सकते हैं। मुम्बई से पधारी संस्था के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी योगिनी दीदी ने कहा कि चुनौतियां हमें ताकत देती हैं। चुनौतियां हमें नए अवसर प्रदान करती हैं। चुनौतियों से ही जीवन में निखार आता है। कौशल विकास एवं आजीविका के अध्यक्ष हरभजन सिंह, हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्ष रेनू भाटिया, फरीदाबाद के सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके ऊषा दीदी ने भी संबोधित किया।

संस्कृति के उत्थान के लिए सनातन परंपराओं और मूल्यों को धारण करने की आवश्यकता

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में फाइनेंस प्रोफेशनल्स के लिए क्रिएटिंग ए कल्चर ऑफ वेल बीइंग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में सीए, सीएस, सीएमए और एडवोकेट्स सहित 200 से भी अधिक लोग सम्मिलित हुए। इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरी के अध्यक्ष सीएस बी. नरसिम्हन ने कहा कि संस्कृति के कल्याण के लिए हमें मूल्यों और सनातन परम्पराओं को अपनाने की आवश्यकता है।
संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन ने कहा कि श्रेष्ठ संस्कृति के निर्माण के लिए श्रेष्ठ संस्कारों की आवश्यकता है। जब हम ह्यूमन बीइंग कहते हैं तो बीइंग वास्तव में आत्मा का सूचक है। लेकिन बीइंग को भूलकर हम केवल स्वयं को ह्यूमन समझते हैं। शांति, प्रेम और आनंद जैसे मूल गुण वास्तव में आत्मा में निहित हैं। समाज और संस्कृति के कल्याण के लिए आत्मा के इन्हीं मौलिक गुणों की आवश्यकता है। आत्मिक गुणों को जागृत करने के लिए मन और बुद्धि का सम्बन्ध परमात्मा से जरूरी है।

मुम्बई से पधारी संस्था के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी योगिनी दीदी ने कहा कि अधिक वर्क लोड और कॉम्पिटिशन के कारण तनाव बढ़ रहा है। आज हम केवल बाहर की तरफ भाग रहे हैं। हमारी असली शक्ति आंतरिक स्वरूप में निहित है। आध्यात्मिकता ही हमें तनाव से मुक्त कर सकती है। आध्यात्मिकता एक सकारात्मक चिंतन की शुरुआत करती है। राजयोग के अभ्यास से सहज ही चिंता मुक्त बन सकते हैं। डॉ. स्वाति, पार्टनर डिलाइट, माइक्रोसॉफ्ट की सीएफओ रेखा तल्लूरी, सीए ऋषभ श्यामसुखा, सीए राज चावला, सीएमए निखिल गुप्ता एवं सीए अमित गुप्ता ने भी कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। मुख्यालय माउंट आबू से आईं एडवोकेट बीके लता ने राजयोग के अभ्यास से शांति की गहन अनुभूति कराई।

आपदा में संकटमोचक की भूमिका निभाता है हैम रेडियो

ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में बना हैम रेडियो क्लब

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मुख्यालय द्वारा भारत सरकार से मान्यता प्राप्त कर हैम रेडियो क्लब का गठन किया है। हैम रेडियो की मुख्य भूमिका प्राकृतिक आपदा, बाढ़, भूकंप में अहम होती है और संकटमोचक की भूमिका निभाता है। जब संचार के सभी साधन फेल हो जाते हैं, तब हैम रेडियो के माध्यम से हम देश के साथ विदेश में भी कहीं भी संपर्क स्थापित कर सकते हैं।
इसके लिए बाकायदा ब्रह्माकुमारीज में 15 से अधिक भाईयों ने प्रोफेशनल ट्रेनिंग ली है, ताकि आपदा के समय इसका सही उपयोग कर सकें। हर वर्ष हैम रेडियो की मॉक ड्रिल की जाती है। इसे लेकर ही हाल ही में माउंट आबू इंटरनेशनल हैम रेडियो क्लब और गांधीनगर गुजरात के स्पर्फ एमेच्योर हैम रेडियो क्लब द्वारा संयुक्त रूप से एमेच्योर रेडियो सोसाइटी ऑफ इंडिया (एआरएसआई) के बैनर तले मान सरोवर परिसर में वार्षिक हिल टॉप कॉन्टेस्ट आयोजित किया गया। इसमें आबू के पर्वतीय स्थान पर आपदा के समय हैम रेडियो संपर्क स्थापित करने के लिए मॉक ड्रिल की गई। माउंट आबू अंतरराष्ट्रीय हैम रेडियो क्लब माउंट आबू से संचालित है। यह रेडियो लाइसेंस धारकों का एक समूह है, जिन्हें भारत सरकार के संचार मंत्रालय द्वारा वायरलेस इक्विपमेंट चलाने के लिए लाइसेंस प्रदान किया गया है। इस वार्षिक हिल टॉप कॉन्टेस्ट में हैम रेडियो के मशीनों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें हैम रेडियो के एंटीना, हाई फ्रीक्वेंसी, वैरी हाई फ्रीक्वेंसी, डीएमआरडीएसआर जैसे अलग-अलग इक्विपमेंट का प्रदर्शन किया गया। डेमो के दौरान माधव यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने विजिट किया। इस दौरान उन्होंने हैम रेडियो की तकनीक और उसकी उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

आपात काल में संकटमोचक होता है हैम रेडियो

माउंट आबू अंतरराष्ट्रीय हम रेडियो क्लब के संस्थापक बीके यशवंत पाटिल ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा आपदा के पूर्व तैयारी के लिहाज से इस हिल टॉप कॉन्टेस्ट में भाग लिया गया। देश में जहां कहीं बाढ़, भूकंप या अन्य कोई आपदा आई है तो ऐसी जगह हैम रेडियो ने संकटमोचक की भूमिका निभाई है। समय पर सूचना मिलने से आपदा में जल्दी सहायता मिल सकी है। मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई ने भी माक ड्रिल में पहुंचकर सभी का हौसला बढ़ाया।

नई दिल्ली। भारत के केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, एजुकेशन विंग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका बहन, बोकारो के बीके शैलेष भाई ने मुलाकात कर आबू रोड में ट्रेन सुविधा बढ़ाने की मांग की।

नई दिल्ली। भारत सरकार के इस्पात राज्यमंत्री फगन सिंह कुलस्ते से संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, बीके शिविका बहन, बीके शैलेष भाई ने मुलाकात कर मुख्यालय का निमंत्रण दिया।

नादेड़ (महाराष्ट्र)। नांदेड़ की शेतकरी मित्र कंपनी की सहभागिता मालेगांव वातहरिता किसानों द्वारा उत्पादित कृषि उपज बेचने के लिए 15 से अधिक किसान उत्पादक कंपनियों और विपणन कंपनियों में आपसी समझौता हुआ। मुंबई में यौगिक खेती कर रहे किसान बीके भगवान भाई ने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से मुलाकात कर कंपनी की जानकारी दी।

पुसौर/रायगढ़ (छग)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से बीके जेमा बहन और बीके सीता बहन ने मुख्यमंत्री को परमात्मा का स्मृति चिंह भेंट किया। इस दौरान वित्तमंत्री ओपी चौधरी विधायक भी मौजूद रहे।

विजयनगर (जबलपुर, मप्र)। पीडी अंजुमन इस्लामिया गर्ल्स कॉलेज में एग्जाम फीयर से बचने के उपाय विषय पर वर्कशॉप आयोजित की गई। इसमें मोटीवेशनल स्पीकर बीके पूजा दीदी ने बच्चों को मैमोरी मैनेजमेंट और टाइम मैनेजमेंट के टिप्स बताते हुए राजयोग मेडिटेशन को अपनाने की सलाह दी।

ब्रह्माकुमारीज़ पाटन का गोल्डन जुबली समारोह धूमधाम से मनाया

शिव आमंत्रण, पाटन (गुजरात)

ब्रह्माकुमारीज पाटन का गोल्डन जुबली समारोह और दिव्य दर्शन भवन के मंगलमूर्ति हाल का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। पाटन क्षेत्र की 33 ब्रह्माकुमारी बहनें जिन्होंने अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया, दो कुमारों और 80 बीके भाई-बहनों का विशेष सम्मान किया गया। दिल्ली से आई ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि पाटन ब्रह्माकुमारीज़ का दिव्य दर्शन भवन और मंगल मूर्ति सभागार सभी का मंगल करने वाला दिव्यगुणों की खुशबू से भरपूर है। जीवन में कैसी भी परिस्थिति आए तो सेवाकेंद्र पर आना आपको सच्ची शांति मिलेगी। यह भवन सिर्फ देखने के लिए नहीं वहां जाने से राजयोग की शिक्षा प्राप्त होगी। मुख्य वक्ता मुख्यालय से आई राजयोगिनी शीलू दीदी ने कहा कि दिव्यता का दर्शन करने वाला यह नवनिर्मित भवन से अनेक आत्माओं की सेवा होगी। पॉजिटिव वातावरण द्वारा मानवीय मूल्यों का विकास होगा। राज्य के श्रम रोजगार, प्रवासन और उद्योग कैबिनेट मंत्री बलवंतसिंह राजपूत ने कहा कि आज मुझे इस बात का आनंद है कि 50 वर्ष वर्ष पूर्व नगर में ब्रह्माकुमारीज़ की शुभ शुरुआत हुई, जिसका आज कितना डेवलपमेंट हुआ है। संस्थान द्वारा की जा रहीं व्यसन मुक्ति, तनावमुक्त जैसे सेवाएं सराहनीय हैं।

युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी चंद्रिका दीदी ने कहा कि आज सभी का सौभाग्य का सूरज निकला है कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिया जाने वाला आत्म ज्ञान, परमात्म ज्ञान से जीवन के हर सवालों का जवाब प्राप्त कर सकते हैं। मेहसाणा सबजोन की इंचार्ज ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी सरला दीदी ने परमात्मा मदद का अनुभव शेयर किया। प्रेस क्लब के प्रमुख राजेशभाई सोनी ने वरिष्ठ दीदियों का सम्मान किया। कुमारी बंसरी ने सुंदर लक्ष्मीनारायण की रंगोली बनाई। इस मौके पर पूर्व कमिश्नर जेडी भाड़, विधायक डॉ. किरीटभाई पटेल, एचएनजी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रोहितभाई देसाई, भाजपा प्रमुख दशरथभाई ठाकोर, नगर पालिका प्रमुख हिरलबेन परमार, जगन्नाथ मंदिर के ट्रस्टी पीयूषभाई आचार्य, राममंदिर के कीर्ति भाई महेता सहित शहर व आसपास से आए आठ हजार से अधिक लोग मौजूद रहे। सेवाकेंद्र की निदेशिका नीलम दीदी ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि बहनों के त्याग, तपस्या सेवा से आज अध्यात्म की रोशनी चारों ओर बिखर रही है।

अटलादरा वड़ोदरा में प्रभु समर्पण प्रोग्राम आयोजित

छह बेटियों ने अपनाई अध्यात्म की राह

शिव आमंत्रण, अटलादरा/वड़ोदरा

त्याग, तपस्या और संयम के मार्ग पर चलते हुए नगर की छह बेटियों ने अध्यात्म का मार्ग अपनाया है। अब इनके जीवन का एक ही उद्देश्य है मानव सेवा, प्रभु सेवा। इन बेटियों का प्रभु समर्पण समारोह में ब्रह्माकुमारीज अटलादरा सेवाकेंद्र द्वारा धूमधाम से आयोजित किया गया। समारोह में सभी बेटियों ने शिवलिंग पर वरमाला पहनाकर अपना जीवनसाथी के रूप में स्वीकार किया।

मुख्य अतिथि लंदन से पधारीं संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी डॉ. जयंती दीदी ने कहा कि सकारात्मक और शक्तिशाली मनोस्थिति ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। राजयोग द्वारा परमात्मा से मानसिक संबंध जोड़कर परमात्मा के गुण और शक्तियों को लेकर स्वयं को शक्तिशाली बनाना सहज राजयोग है। जितना आध्यात्मिक रूप से हम शक्तिशाली बनते हैं, उतना ही परिस्थितियों में स्वयं को नियंत्रित करना और समाधान निकालना संभव हो जाता है। कमजोर मन समस्याएं पैदा करता है और परिस्थितियों में भयभीत होता है। शक्तिशाली मन समाधान का रास्ता निकाल लेता है, इसीलिए राजयोग द्वारा परमात्मा को अपना साथी बनाएं और उनकी शक्तियों का अनुभव करते हुए निश्चिंत जीवन जीएं। यही निश्चिंत जीवन जीने की कला है। ब्रह्माकुमारी जीवन श्रेष्ठ आदर्श एवं मूल्यों के द्वारा श्रेष्ठ और सशक्त संस्कार बनाने का जीवन है। जिससे यह बहनें समाज के आगे एक उदाहरण बनकर सभी को सकारात्मक और शक्तिशाली बनाने की सेवा द्वारा सुखमय संसार के निर्माण में श्रेष्ठ योगदान देती हैं और अपना जीवन भी सब की दुआओं और श्रेष्ठ पुण्य कर्मों से सफल करती हैं।

राजमाता शुभांगिनी राजे गायकवाड़ ने कहा कि हमारे वड़ोदरा शहर के लिए बड़े गर्व का विषय है जो ऐसा पावन आयोजन नगर में किया गया है। ऐसे शुभ अवसर पर हम सभी वड़ोदरावासी बड़े दिल से इन छह कुमारियों को अपने हृदय का आशीर्वाद देते हैं कि यह बहनें अपने लक्ष्य में पूर्णतः सफल हों और अपना और सभी का जीवन श्रेष्ठ बना दें।

अटलादरा सेवाकेंद्र इंचार्ज राजयोगिनी बीके डॉ. अरुणा दीदी एवं सहसंचालिका बीके पूनम दीदी ने आभार प्रकट किया। मणिनगर सबजोन (अहमदाबाद) की इंचार्ज राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी नेहा दीदी ने सभी को ब्रह्माकुमारी जीवन का उद्देश्य क्या है और समर्पित होने वाली बहनों के जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य क्या है इसे स्पष्ट किया। मंगलवाड़ी सबजोन की इंचार्ज बीके राज दीदी, मुख्यालय से बीके हंसा दीदी की भी मुख्य रूप से मौजूद रहीं। इस मौके पर भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. विजय शाह, विधायक शैलेष सोट्टा, केयर ग्रुप की सीईओ पारुल बेन, ट्यूब कंपनी की बिंदिया बेन शाह, जगदीश फूड प्रालि के मितेश ठक्कर, आईटीएम वोकेशनल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. अनिल बिसेन विशेष रूप से अतिथि के रूप में मौजूद रहे। समारोह में अनेक गीत-संगीत, नृत्य एवं नाटकों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से कलाकारों ने सभी का मन मोह लिया।

नई दिल्ली: नशामुक्त भारत अभियान के तहत वाहन सेवा की लांचिंग

नई दिल्ली। भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय एवं ब्रह्माकुमारीज के मेडिकल विंग द्वारा डॉ. आम्बेडकर इन्टरनेशनल सेन्टर, जनपथ पर नशामुक्त भारत अभियान के तहत वाहन सेवा का शुभारंभ किया गया। इससे दिल्ली की कॉलोनियों, वार्डों में लोगों को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के सचिव सौरभ गर्ग, प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी, केंद्रीय समाज कल्याण एवं अधिकारिता मंत्रालय की संयुक्त सचिव राधिका चक्रवर्ती, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने वाहन सेवा का शुभारंभ किया।

स्वर्णिम भारत के निर्माण में आध्यात्मिकता का योगदान

हरिद्वार (उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र द्वारा जगजीतपुर स्थित अनुभूति धाम में स्वर्णिम भारत के निर्माण में आध्यात्मिकता के योगदान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके शारदा दीदी, अवधूत मंडल आश्रम के स्वामी रूपेंद्र प्रकाश, स्वामी सोमेश्वरानंद महाराज, 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की ब्रांड एंबेसडर मनु शिवपुरी, राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मीना दीदी, ब्रह्माकुमार सुशील भाई ने अपने विचार व्यक्त किए।

समाजसेवा प्रभाग का सेमीनार आयोजित

महू/इंदौर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज के समाजसेवा प्रभाग द्वारा मूल्य आधारित सेवा द्वारा समृद्ध समाज की पुनर्स्थापना विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें अतिथि के रूप में जनजाति प्रकोष्ठ विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपमाला रावत, समाजसेवी एडवोकेट विक्रम दुबे, सेवानिवृत्त अधिकारी महिला बाल विकास नलिनी शिंदे, प्रभाग की राजस्थान की एडिशनल जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी बीके विजयलक्ष्मी दीदी, इंदौर की जोनल कोऑर्डिनेटर अन्नपूर्णा दीदी, सीनियर राजयोगा टीचर पदमा दीदी, माउंट आबू से मुख्यालय संयोजक बीरेंद्र भाई, बीके प्रकाश भाई, बीके महावीर भाई ने विचार व्यक्त किए।

आधा घंटे के मेडिटेशन से दिनभर के लिए मिलेगी ऊर्जा

शिव आमंत्रण, ग्वालियर (मप्र)

जब व्यक्ति की आध्यात्मिक क्षमता क्षीण हो जाती है, तो उसके जीवन में तनाव बढ़ने लगता है। फिर उसका दिमाग भी उसी तरह रिएक्ट करने लगता है। छोटी-छोटी बात पर तनाव हो जाना, हमारी मानसिक कमजोरी को प्रकट करता है।

उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से आई प्रेरक वक्ता बीके ऊषा दीदी ने चेंबर ऑफ कॉमर्स के राजमाता विजयाराजे सिंधिया सभागार में तनाव मुक्त जीवन विषय पर संबोधित करते हुए व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्वालियर सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि तनाव का नकारात्मक प्रभाव हमारे मन के साथ तन पर भी पड़ता है। जब हम गहरे अवसाद में चले जाते हैं, तो नींद नहीं आती और मनोचिकित्सकों का सहारा लेना पड़ता है। मोटी फीस लेने के बाद भी वह हमें एक ही सलाह देते हैं कि आप नियमित रूप से मेडिटेशन करें। इससे अच्छा तो यह है कि हम पहले ही मेडिटेशन आरंभ कर दें। तनाव मुक्त होने के लिए अपनी स्प्रीचुअल इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए प्रयास करें। स्वस्थ मन के लिए भी अच्छे विचारों की खुराक की जरूरत होती है। जब हमारा मन विचारों से पुष्ट होता तो छोटी-छोटी बातें दिमाग को प्रभावित नहीं करतीं। जब हम थोड़ी देर के लिए भी मेडिटेशन के लिए बैठते हैं तो व्यक्ति दिन भर के लिए असीम ऊर्जा से भर जाता है। इसलिए अपने जीवन को संवारने के लिए आधा घंटा अवश्य निकालें। इस दौरान ईश्वरीय सेवा में जीवन समर्पित करने वालीं बीके महिमा ने परमात्मा शिव को वरमाला पहनाकर जीवन साथी के रूप में चुना। वहीं पूर्व में समर्पण करने वालीं बीके रोशनी, बीके सुरभि, बीके कुमकुम, बीके काजल, बीके पूनम का सम्मान किया गया। इस दौरान पूरे भोपाल जोन से आईं बहनें मौजूद रहीं।

जैविक खेती से ही होगा मनुष्य का भविष्य उज्जवल

मालेगांव/नादेड़ (महाराष्ट्र)। यौगिक-जैविक खेती करने से ही मनुष्य और धरती माता का भवितव्य उज्जवल हो सकता है। खेती में कृत्रिम रसायनों के अनियंत्रित प्रयोग के कारण धरती माता बीमार हो गई है और बीमार धरती का अन्न ग्रहण करने के कारण मनुष्य के स्वास्थ का स्तर भी निरन्तर नीचे गिरता जा रहा है। कैंसर जैसी बीमारियां मनुष्यों में बढ रही हैं। यह विचार ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउंट आबू से पधारे कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी बीके राजू भाई ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में आसपास के बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। राजयोगिनी बीके सुनंदा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रगतिशील किसान और यौगिक-जैविक खेती में सराहनीय कार्य करने पर महाराष्ट्र सरकार से पुरस्कार प्राप्त बीके भगवान भाई ने भी अपने अनुभव सांझा किए।

टाटा मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल

माइंड स्पा में डॉक्टर्स और नर्स ने की असीम शांति की अनुभूति

बोरीवली (मुंबई)। ब्रह्माकुमारीज़ बोरीवली टीम द्वारा टाटा मेमोरियल सेंटर में दो दिवसीय माइंड स्पा का आयोजन किया गया। इसमें चार विकल्पों को रखा गया- पहला आडियो, दूसरा विजुअल, तीसरा स्क्रैल टेक्स्ट, सांग्स द्वारा मेडिटेशन का अभ्यास, योग अनुभूति के इस नए प्रयास का अनेक लोगों ने प्रयोग किया और बहुत सुंदर अनुभव किए। माइंड स्पा का हॉस्पिटल के डॉक्टर्स, नर्स, स्टाफ और सिक्योरिटी स्टाफ ने लाभ लिया। लोगों को तीन से पांच मिनट के ही मेडिटेशन में बहुत शांति की अनुभूति हुई। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ के महाराष्ट्र जोन की निदेशिका और संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी, कैंसर सर्जन डॉ. अशोक मेहता, टाटा हॉस्पिटल के एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. श्रीपद बनावली, डॉ. प्रशांत काकोड़े मुख्य रूप से मौजूद रहे। इस दौरान स्पा लेने वाले लोगों का यही अनुभव रहा कि ऐसे आयोजन से मन को असीम शांति मिलती है। मन सुकून से भर जाता है। माइंड का सारा तनाव और प्रेशर दूर हो जाता है। इसलिए हमें कुछ समय निकाल कर रोज मेडिटेशन जरूर करना चाहिए।

महाकरुणा दिवस पर सम्मान

जीवन में दया का होना जरूरी है, दया ही धर्म का मूल हैः बीके बिन्नी

दिल्ली। महाकरुणा दिवस 2024, महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर (एमआईएमसी), लेह-लद्दाख महाकरुणा फाउंडेशन दिल्ली और अध्यात्म साधना केंद्र दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय की बीके डॉ. बिन्नी बहन को सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जीवन में दया का होना जरूरी है। दया ही धर्म का मूल है। जिस इंसान में दया नहीं है तो वह इंसान कहलाने के योग्य नहीं है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्जवलन के साथ की गई। इसमें वियतनाम और कई अन्य देशों से आए भिक्षुओं और ननों द्वारा विश्व शांति के लिए प्रार्थना की गईं। कार्यक्रम में बौद्ध धर्म, जैन धर्म, हिंदू धर्म, सिख धर्म और ईसाई धर्म का प्रतिनिधित्व करने वालीं कई हस्तियों ने शिरकत की। विभिन्न देशों के राजदूत भी उपस्थित थे। साथ ही केरल की पूर्व राज्यपाल डॉ. किरण बेदी, डॉ. प्रियरंजन त्रिवेदी और डॉ. संदीप मारवाह जैसे प्रतिष्ठित विद्वान और शिक्षाविद् मौजूद रहे।

डिलीट स्ट्रेस-क्रिएट हैप्पीनेस विषय पर सेमीनार

मैं आत्मा मालिक हूं, गुलाम नहीं : बीके अनन्या

शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)

शासकीय अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय किशोर सागर सेवाकेंद्र के तत्वावधान में एमएड एवं बीएड के समस्त प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के लिए डिलीट स्ट्रेस-क्रिएट हैप्पीनेस विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इसमें मुख्य वक्ता ऑस्ट्रेलिया से पधारीं बीके अनन्या दीदी ने तनाव रहित जीवन कैसे व्यतीत करें, इसके बारे में बताते हुए कहा कि सबसे पहले हम अपने आप को पहचानें और जो मैं हूं उसे मालिक समझें गुलाम नहीं। यह संकल्प दिन में तीन बार करें कि मैं आत्मा मालिक हूं, गुलाम नहीं। यह संकल्प करने से अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित रहेंगे और क्यों? क्या? कैसे? के चक्कर से छूट जाएंगे। यही शब्द हमें अनेक प्रश्नों में उलझा देते हैं और प्रश्नों में उलझने वाले कभी प्रसन्नचित्त नहीं रह सकते। इसलिए जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है खुश रहने की कला सीखना। जिसने यह कला सीख ली उसके जीवन सफल है। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की वंदना एवं पूजन से हुई। इसके पश्चात प्राचार्य शिक्षा महाविद्यालय एमके त्रिपाठी ने ब्रह्माकुमारी बहनों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। स्थानीय सेवाकेंद्र से बीके रीना ने छोटे-छोटे टिप्स के माध्यम से जीवन में खुश रहने की तरीके बताएं एवं एक्टीविटी कराई। प्राचार्य शिक्षा महाविद्यालय ने ऐसे शिक्षाप्रद कार्यक्रम के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों का आभार व्यक्त किया। समापन पर शिक्षकों ने बीके अनन्या से अनेक प्रश्न पूछे, जिनके सारगर्भित जवाब सभी को मिले और संतुष्ट हुए। कार्यक्रम में डॉ. प्रभात साहू, डॉ. प्रमोद सिंह, बीना गुप्ता सहित महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण एवं एमएड एवं बीएड के लगभग 350 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

नई राहें

बीके पुष्पेंद, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

शिव शक्ति-नारी शक्ति...तेरी गाथा है अनंत

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (08 मार्च) पर विशेष

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। नारी ईश्वर की वह अनुपम कृति, उपहार, वरदान है जिसके व्यक्तित्व और कृतित्व में सारा संसार समाया है। मां के रूप में सृजनहार बनकर जीवन को गढ़ती है तो ममता की छांव में पालनहार बनकर इसे संवारती है। नारी की गाथा, महिमा, अनंत, अद्भुत और अवर्णनीय है। क्योंकि इस धरा पर नारी ही ईश्वर की वह रचना है जिसमें उसके स्वरूप दिखता है। हमारी पुरातन देवी-देवता संस्कृति, सनातन संस्कृति की महानता और विशालता ही है कि देवताओं के पहले देवियों का नाम लिया जाता है- श्रीलक्ष्मी- श्रीनारायण, श्रीराधे-श्रीकृष्ण, श्रीसीता-श्रीराम। हमारी संस्कृति में नौ देवियां, नौ गुणों, शक्तियों, विशेषताओं और वरदानों की मूर्ति हैं। कहीं भी नौ देवताओं का वर्णन नहीं है। हमारे देश की महानता का इससे बढ़कर कोई उदाहरण नहीं हो सकता है, जहां भारत को माता कहा जाता है। यह हमारी संस्कृति और सभ्यता की ही महानता है कि हमारे देश में नदियों को भी मां गंगा, मां नर्मदा, मां जमुना, मां कावेरी, मां सरस्वती, मां गोदावरी कहा जाता है। नारी के मां रूप की महिमा अपरंपार, अपार और अनंत है। इसे शब्दों में न बांधा जा सकता है और न बयां किया जा सकता है। सनातन संस्कृति में भगवान, ईश्वर को माता और पिता दोनों कहा गया है, उनका मातृ रूप भी है तो पितृ रूप भी है। हम भगवान की महिमा में गाते हैं कि तुम्हीं मात-पिता, बंधु, सखा, गुरु सब एक तुम्हीं हो प्रभु। परमात्मा ब्रह्मा तन का आधार लेकर नई दुनिया की उत्पत्ति, रचना करते हैं तो यहां नई दुनिया का रचनाकार, सृजनहार होने से वह ब्रह्मा मां रूप में हैं तो विष्णु के द्वारा पालन करते हैं तो पितृ रूप में परिवार की तरह संभालते हैं। मातृ रूप के बिना यह संसार अधूरा और अपूर्ण है। सृष्टि की रचना में मां का रूप ही इसे पूर्णता प्रदान करता है।

शास्त्रों में नारी को बताया है यज्ञ समान पूजनीय-

मनुस्मृति के तीसरे अध्याय में नारी की महिमा में लिखा है कि- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अर्थात् जिस कुल में, घर में स्त्रियों का आदर है, वहां देवता प्रसन्न रहते हैं, देवताओं का वास होता है। अथर्ववेद (7.47.1) में लिखा है कि हे स्त्री! तुम सभी कर्मों को जानती हो। हे स्त्री! तुम हमें ऐश्वर्य और समृद्धि दो। वहीं (7.47.2)श्लोक में लिखा है कि- तुम सबकुछ जानने वाली हमें धन–धान्य से समर्थ कर दो। हे स्त्री! तुम हमारे धन और समृद्धि को बढ़ाओ। (11.1.17) श्लोक में लिखा है कि स्त्रियां शुद्ध स्वभाव वाली, पवित्र आचरण वाली, यज्ञ समान पूजनीय, सेवा योग्य, शुभ चरित्र वाली और विद्वत्तापूर्ण हैं।

नारी के शक्ति और साहस से भरा है इतिहास-

इतिहास गवाह है कि जब-जब राज्यसत्ता, धर्मसत्ता पर आक्रांताओं ने प्रहार किया है तो नारी ने अपने साहस, शौर्य, वीरता और शक्ति से खुद को साबित किया है। फिर रुद्रमा देवी हों जिन्होंने अपनी वीरता का लोहा मनवाया या रानी दुर्गावती जिन्होंने आक्रांतोओं को मुंहतोड़ जवाब दिया। इंदौर के होलकर राजघराने की देवी अहिल्याबाई ने न केवल काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, महाकाल और अन्य शिव मंदिरों का पुन:निर्माण कराया, बल्कि अंग्रेजों के समय सिर्फ होल्कर राजाओं ने अधीनता स्वीकार नहीं की तो इसका सारा श्रेय मां अहिल्याबाई को जाता है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता से सभी परिचित ही हैं। मैसूर के कित्तूर राज्य की रानी चेन्नम्मा ने अंग्रेजों की राज्य हड़प नीति के विरोध में सशक्त विद्रोह किया तो बेगम हज़रत महल ने अंग्रेजों को धूल चटा दी थी। भक्त मां मीराबाई के अगाध प्रेम के आगे भगवान भी नतमस्तक हो गए तो रानी कर्णावती, रजिया सुल्तान, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, काली बाई, सावित्री बाई फुले, विजयलक्ष्मी पंडित, मदर टेरेसा ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से समाज को नई राह दिखाई है। न जाने ऐसी कितनी वीरांगनाएं और समाज सुधारक नारियों ने जन्म लिया है जिनकी गौरवगाथा सुनकर आज भी हम गर्वित होते हैं।

विश्व परिवर्तन का कलश भी नारी के सिर-

परमात्मा तो जानी-जाननहार है। वह अच्छे से जानता है कि शिव शक्ति, नारी शक्ति के बल से ही विश्व शांति, विश्व परिवर्तन और नवयुग का निर्माण संभव है। नारी में छिपे अनंत दिव्य गुण, विशेषताओं को देखते हुए उनके सिर पर विश्व परिवर्तन का कलश रखा। क्योंकि सृजन के कार्य में समुद्र की तरह विशालता, शांति और धैर्य तो आसमान की तरह ऊंची सोच, प्रकृति की तरह सदा देने वाले दाताभाव की तो मां की तरह स्नेह-प्यार की जरूरत होती है। मां सरस्वती की तरह ज्ञानवीणा की तो मां दुर्गा की तरह आसुरी प्रवृत्ति, बुराइयों, आसुरी कर्म, सोच पर पूरी शक्ति के साथ प्रहार की। यह सब एक नारी के बलबूते ही संभव है।

आज से 87 वर्ष पूर्ण भारत माता और वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ करते हुए वर्ष 1937 में परमात्मा का इस धरा पर दिव्य और अलौकिक अवतरण हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के तन का आधार लेकर उन्होंने ज्ञान बल, योग बल की शक्ति से नारी की सोई हुईं शक्तियों का एहसास कराया। उनमें बल भरा और दिव्य ज्ञान दिया कि- तुम ही शिव शक्ति हो, तुम ही मां दुर्गा, मां काली, मां संतोषी, मां सरस्वती हो। अब अपनी शक्ति को पहचानो, खुद को ज्ञान-योग की शक्ति से भरपूर कर ज्ञान गंगा, उद्धारिणी, कल्याणी बनकर इस जग का उद्धार करने में खुद को समर्पित कर दो। हे! शिव शक्ति अब अज्ञान निद्रा को त्यागो और त्याग, तप, संयम, साधना के मार्ग पर चलकर अपनी गाथा को चरितार्थ करो। सारा विश्व तुम्हें आशा की नजरों से देख रहा है। तुम्हें ही समाज में आशा और उम्मीद जगाना है। जन-जन को सच्चा गीता ज्ञान देकर उन्हें जन्मोंजन्म के लिए सुख-शांति, पवित्रता, आनंद का मार्ग दिखाना है। राजयोग की शिक्षा से तुम्हें इस जग पर फिर से स्वर्ग सजाना है। पूरी दुनिया में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही नारी शक्ति का एकमात्र सबसे बड़ा संगठन है जहां सेवाकेंद्र से लेकर मुख्य प्रशासिका का दायित्व महिलाएं संभालती हैं। भाई सहयोगी के रूप में साथ देते हैं। दुनिया में इससे बड़ा महिला सशक्तिकरण का उदाहरण और क्या हो सकता है कि ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय में भाई भोजन बनाते हैं। यह सब संभव हुआ है राजयोग ध्यान से।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

जीवन प्रबंधनः बीके शिवानी दीदी

अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता, ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी आईकॉन

आप बहुत खास हैं... अपनी खूबियों को पहचानें

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।

पहले खुद से सवाल-दो मिनट के लिए शांति में बैठेंगे। आप अपने आप को मस्तक में विराजमान एक ज्योति आत्मा देखें। शरीर रिलेक्स माइंड पीसफुल। खुद के बारे में चिंतन करें, चैकिंग करें अपने आप की। मेरी नेचर क्या है? अपने स्वभाव को चेक करें। अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग लोगों के साथ मेरा व्यवहार कैसा होता है। परिस्थिति अगर मेरे अनुसार नहीं होती तो मेरा रिएक्शन कैसा होता है? कोई मेरा कहना नहीं मानता, कार्य मेरे अनुसार नहीं करता तो मेरा व्यवहार कैसा होता है? कोई मेरे साथ गलत करता है मेरे लिए बुरा कहता है तो मुझे कैसा लगता है? किसी को क्षमा करना किसी की बात को भूल जाना मेरे लिए कितना आसान है? आज अगर मुझे अपने अंदर कोई एक चीज परिवर्तन करना हो यानी कोई एक आदत बदलनी हो तो वह क्या होगी? हम कितने खास हैं कैसे समझें?

दूसरों को दोष न देकर, खुद को बदलें

आपने पहले खुद की चैकिंग की है? देखा जाए तो सारा दिन हम दूसरों की चैकिंग करते हैं। इनको ये बदलना चाहिए, इन्हें ऐसा नहीं बोलना चाहिए था, इन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, ये कोई बात करने का तरीका नहीं था। कितनी बार खुद के जीवन में कभी बैठ कर अपनी चैकिंग की? अगर किसी ने हमें कहा भी आपको ऐसा नहीं कहना था। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। क्या मुझे उन्हें ऐसा कहना चाहिए था? कोई मुझे ऐसी राय दे रहा हो तो उनकी बात पूरी होने से पहले हम रिजेक्ट कर देते हैं और अपने व्यवहार को सिद्ध कर देते हैं कि मैंने जो कहा जो मैंने किया, वह उस समय उस बात के लिए बिल्कुल सही था। मैं जो हूं, जैसी हूं बिल्कुल सही। अगर मेरे जीवन के अंदर ऐसी कोई आदत आ भी गई है। जैसे जोर-जोर से बोलने की, गुस्सा करने की, किसी की ग्लानी करने की, वो इसलिए आ गई कि वो लोग ही ऐसे हैं। अब शादी ही ऐसे लोगों से हुई अब क्या करें? १०-२०-३० साल से उनके साथ रह रहें हैं तो उनके साथ रहते-रहते चिड़चिड़े हो ही जाना था और क्या होना था? भले पिछले ३० साल अपने ऐसे बीते। अगले ३० साल कैसे बीते वो हमारी च्वाइस है। पिछले ३० साल हमने इस बात में बिताए कि बिचारा मैं, ऐसी परिस्थितियां मेरे जीवन की। बिचारी मैं ऐसे व्यक्ति से मेरी शादी हुई। बहुत बिचारी मैं कि ऊपर से मुझे सास-ससुर और मोहल्ला भी कैसा मिला? तो ये कहते-कहते मैं अपना जीवन बिचारी मैं, बिचारा मैं करते-करते बिता दिया। जो कि खुद और दूसरे भी अपने को बिचारा-बिचारी कहते रहते हैं। लेकिन अब ऐसे सोचना कि अब उनके साथ रहते हुए भी हम कुछ और हो सकते हैं। आज इसे पढ़ने के बाद उनके साथ-साथ ही चलेंगे।

दिल के अनुभव से रिकॉर्ड करें खुशी के क्षण

आज फोन सभी अपने पास रखते हैं। क्या फोटो की जरूरत नहीं होती। क्यों जरूरत नहीं होती, फोटो का क्या करेंगे? रिकॉर्डिंग का क्या करेंगे? कुछ भी यूज नहीं होगा। आजकल हमें आदत पड़ी है कुछ भी होता है हम फोटो निकालना शुरू कर देते हैं। घर में कोई दृश्य हो रहा हो। फोन निकाला फोटो-फोटो... क्योंकि आजकल कैमरा हमारे फोन में हमेशा साथ ही रहता है। फोटो खींचने से क्या होगा? वो क्षण बीत जाएगा और उस क्षण को अनुभव करने की बजाय हम सिर्फ फोटो खींचने में लगे रहेंगे। फिर फोटो खींचकर क्या करेंगे उसका? बाद में हम उस क्षण की फोटो को देखेंगे। आपस में शेयर करेंगे। जो फोटो सही लगता उसे फिट करते हैं और फिर उस फोटो को फे सबुक और सोशल मीडिया में डालेंगे। ताकि दूसरे लोग भी मेरे जीवन के उस क्षण को देखें। उस पल को अधिक से अधिक लोग लाइक भी करें। मैंने उस फोटो के क्षण को अनुभव नहीं किया। लेकिन दूसरे मेरे उस फोटो के क्षण को लाइक करें यह उ‍म्मीद करते हैं। अगर दूसरों ने मेरे फोटो को लाइक नहीं किया तो मैं उनको भी लाइक नहीं करती। फिर ये सारा दोष उस फोटो का है? जीवन का हर क्षण एनर्जी और वाइबे्रशन को महसूस करने के लिए है। फोटो में वो दृश्य आ सकता है फीलिंग नहीं आ सकती है। वो वाइब्रेशन नहीं आ सकती है। वो पल यहां दिमाग में फिट करना, वो फोन में नहीं फिट करना। अगर अभी यहां दिमाग में फिट नहीं हुआ तो बाद में नहीं होगा।

> ### अपनी लाइफ को करें एंजॉय
>
> आज एक संस्कार पक्का करें। आज हम अपने फोन को फोन के लिए यूज करेंगे। कैमरा के लिए नहीं। जब कोई ऐसे मौके पर जहां फोटो खींचनी होती है तो वहां फोटोग्राफर होता ही है। हम सबको फोटोग्राफर बनने की क्या जरुरत है? जिसका वो रोल वह रोल प्ले करे। हम लोग अपने लाइफ को इंजॉय महसूस करें। सिर्फ कैप्चर नहीं करते रहेंगे। हमें लगता है इन चीजों को कैप्चर करके हमेशा के लिए अपना बना लेंगे? सबकुछ कैप्चर करने के चक्कर में एक-एक दिन बीतता जा रहा है। जो महसूस करने की प्रक्रिया थी वो धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

खुशी के क्षण को अनुभूति करने पर मिलेगी खुशी

जितना हम टेक्नोलॉजी में फंसते जाते हैं उतना ही हम अपनी सारी एनर्जी दूसरी चीजों पर बहाते जा रहे हैं। न ही खुद की और न ही दूसरों की एनर्जी को महसूस कर रहे हैं। हम सिर्फ क‍प्यूटर और फोन के साथ बंधे हैं। इसलिए हमारी एनर्जी अंदर ही अंदर घटती जा रही है। इसलिए आज से एक पक्का आदत डालते हैं। सिर्फ जब बहुत जरूरी हो तभी कैमरा से फोटो खींचेंगे। नहीं तो यहां ब्रेन में फोटो खींचेंगे। क्योंकि यहां दिमाग में जो फोटो खींचती है, वह दृश्य की फोटो नहीं खींचती है। दृश्य के अनुभव की खींचती है। दोनों चीजों में बहुत फर्क है। आपके घर में एक छोटा बच्चा है वह आज पहली बार चलना शुरू करता है तो हम फटाफट उसकी फोटो खींचने लगते हैं। तो फोटो में तो सिर्फ यही दिखेगा ना कि वह चल रहा है। उसमें कौन-सी बड़ी बात है। लेकिन एंजॉय क्या करना था? उस मूमेंट को, उसकी खुशी को, अपनी खुशी को। लेकिन वो सब छोड़कर भागते हैं कैमरा की तरफ मोबाइल की तरफ। जल्दी लाओ, फोटो खींचने हैं। अगर वो बच्चा बैठ गया उतनी देर में तो फिर उसको डांटेंगे, उठ-उठ फिर से चल। जीवन की जो नेचुरल फीलिंग, जो विश्वसनीय फीलिंग है वो धीरे-धीरे खत्म होती गई। ये जो छोटी-छोटी चीजें हैं। जहां हम खुशी क्रियेट कर सकते थे। औरों को खुशी बांट सकते थे। औरों की खुशी को फील कर सकते थे, उसको मिस किया। फिर कहा जीवन में खुशी नहीं है। कभी भी खुशी फोटो या रिकॉर्डिंग देख-सुनकर नहीं आ सकती। जो उस खुशी के क्षण को अनुभूति करने में आ सकती थी।

> ## कलियुग में सतयुगी बनकर रहना ही राजयोग
>
> जब हम पीसफुल, निःस्वार्थ, प्रेममयी, शुद्ध आत्मा, स्वभाव संस्कार से बिल्कुल स्टेबल होंगे तो सतयुग महसूस होगा। अगर सामने वाला कलियुग में है तो कलियुग में गुस्सा करना, झूठ बोलना, धोखा देना एलाउ है। लेकिन सतयुग में गुस्सा करना नॉट एलाउड है। सतयुग में बुरा महसूस करना, रोना, उल्टा जवाब देना नॉट एलाउड है। अब ये कलियुग और सतयुग इक्क_ रह पाएंगे? सतयुगी संस्कार लेकर सतयुग में रहना ये तो कोई भी कर सकता है। हमारे साथ सब प्यार से बात करें तब हम भी प्यार से बात करें, तो उसमें क्या ताकत चाहिए? वो तो कोई भी कर सकता है। सतयुग में सतयुगी जैसा रहना सबसे आसान है। कलियुग में कलयुगी जैसे रहना बहुत आसान है। कोई भी कर सकता है। लेकिन कलियुग में सतयुगी होकर रहना वो राजयोग मेडिटेशन है।

श्रीराम के जीवन चरित्रों को जीवन में अपनाएं

शघाई(चीन)। गुआंगज़ौ में भारत के महावाणिज्य दूतावास में गणतंत्र दिवस मनाया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की चीन में निदेशिका बीके सपना दीदी ने कहा कि हम अयोध्या राम मंदिर की ऐतिहासिक घटना के साक्षी बने और यह तभी प्रकट होगा जब हम अपने जीवन में मर्यादाओं और उच्चतम आचार संहिता का पालन करेंगे। दिव्य गुणों को अपनाएंगे। हमारे विचारों, शब्दों और कार्यों में सच्चाई, ईमानदारी और पवित्रता जैसे मूल्य होंगे तो हमारे जीवन चरित्र में राम प्रदर्शित होंगे। बीके ख़ुशी ने शास्त्रीय प्रदर्शन किया। महावाणिज्य दूत शंभू एल. हक्की ने राष्ट्रपति का संदेश पढ़कर सुनाया।

सबसे पहले अपने मन में बनाएं नए विश्व की योजना

रीगा, लातविया। रीगा में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र लातविया और बाल्टिक देशों में सेवा की 31 वीं वर्षगांठ मनाई गई। कार्यक्रम में आत्म-विकास के लिए नए विचारों और दुनिया को बेहतरी के लिए कैसे बदला जाए, इसका आह्वान किया गया। इसमें वक्ताओं ने कहा कि नई दुनिया बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इसके लिए महान विश्व सुधारक परमपिता परमात्मा सुझाव देते हैं कि नये विश्व की योजना सबसे पहले अपने मन में बनानी चाहिए। हमें अपने अद्भुत परिवर्तन के माध्यम से स्वर्ण युग का मार्ग प्रशस्त करना है। हमें स्वर्णिम क्रांतिकारी विचारों की आवश्यकता है।

राजयोग के बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है

कैरेबियन। ब्रह्माकुमारीज़ की मॉन्ट्रियल में सेवाकेंद्र प्रभारी ऐनी-क्रिस्टेल पांच सप्ताह के दौरे पर कैरेबियन पहुंचीं। कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि बीके के जीवन की खोज करना एक बहुत ही समृद्ध अनुभव था। जो अपने द्वीप या देश पर अकेले रहते हैं और फिर भी, बाबा के कार्य के लिए इतने विश्वास, उत्साह के साथ सेवा करते हैं। राजयोग सीखने के बाद जीवन में कुछ शेष नहीं रह जाता है। कैरेबियन में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका बीके हेमलता दीदी ने भी विचार व्यक्त किए।

रोड सेफ्टी वॉकथान में दिया सेफ्टी का संदेश

बोरीवली (मुंबई)। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से यातायात प्रभाग द्वारा सुरक्षा जन-जागृति बढ़ाने के लक्ष्य से आरटीओ थाने और डीएम फाउंडेशन के सहयोग से रोड सेफ्टी वॉकथान का आयोजन किया गया। पुलिस बैंड की धुन पर विशेष अतिथि बीके दिव्यप्रभा (अध्यक्ष, ट्रांसपोर्ट विंग एवं प्रभारी, ब्रह्माकुमारीज़ बोरीवली सबजॉन), दीपाली मोकाशी (अध्यक्ष, डीएम फाउंडेशन), अल्तमाश फ़रीदी सिंगर ने वॉक को हरी झंडी दिखाई। इसमें पुलिस अधिकारी,जवान, कॉलेज विद्यार्थी और बीके भाई-बहनों ने भाग लिया।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Feb. 2024
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादकः ब्र.कु. कोमल » संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र